बलचनमा

(मैथिली)

मूल लेखक

ना गा र्जु न

मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कलकत्ता

प्रकाशक :

मिथिला सांस्कृतिक परिषद्

पंजीकृत कार्यालय :

१०, बालमुकुन्द मक्कर रोड,

कलकत्ता-७

विद्यापति-स्मृति-समारोह १९६६-६७

दाम : ४) टाका



प्रथम संस्करण : ११००

५, फरवरी, १९६७

घटना समय : १९३७ ई० क शुरू तक

मुद्रक :

कुमार प्रिंटर्स

५बी, तुकाराम बाबू स्ट्रीट,

कलकत्ता-७

१

जखनी हम चौदह बरखक रही तखनिये हमर बाप मरि गेल। परिवार मे माइ, दाइ आ छोटकी बहिन छलि। एकटा छोट-छीन घर छल। घरक अगुअति में नान्हिटा आंगन छलै, बामा कात आठ-दस धुर बारी छल। ओहि बारी मे भरि साल किछु ने किछु उपजा होइते रहै। बारीक पाछू मे गिरहथक इनार छलनि, आ इनारक सोंका मे खेत। दहिना कात कनिके हटि कऽ हुनके लोकनिक पोखरि सेहो छलनि।

गिरहथक जमीन मे बसल छली। हमरा अपना जिनगीक सबसँ पहिलुक बात एखनियो धरि कनी-कनी मोने हवे। मालिकक दुरा पर हमरा बाबू कें एकटा खम्हेली लगाकऽ बान्हि देले रहै। एँड़ी सँ लिखा धरि काँच करची सँ फोड़ि देले रहै। कतौ-कतौ देहक छाल नोचा गेलै, मारिक चोट सँ। आँखि सँ नोर टप-टप बहिकऽ गाल आ छाती होइत नीचा बहल जाइत छलै। सौंसे देह कारी मलीह भऽ गेलै हमरा बाबूक। थोरबे दूर पर छोटका मालिक चौकी पर यमराज नाहित बैसल रहथिन आ दहिना हाथ सँ मोछ फेरैत रहथि। हुनकर लाल-लाल चकल-चकल आँखि देखिकऽ केकरा ने डर हो जैते। हमर बाबू थर-थर कँपैत मालिकक पएर पड़ने छलै। आ बकारि होइत छल, मालिक यौ……मालिक……छोड़ि दियौ यौ मालिक……… लतुआक प्रान छूटि जैते औ मालिक दोहाइ

सरकार कें·········अँही माई बाप छी, छोड़ि दियौ। माय के कात
कनैत देखि हमहूँ भुकुर-भुकुर कानेऽ लगली। हमरा छोटकी बहिनक त
डरे प्राने सुखि गेलै।

कनीकालक बाद बुझलियै जे हमर बाबू मालिकक गाछ सँ टूटा बिसुन
भोग आम तोड़ि लेने रहै। कोंचो किसुनभोग खाय मे चोरठ माहित ब
नीमन लगै छै। आम तोड़ैत कियो ने देखने रहै, बाबू बखाड़ी के दोग
आम गोड़ैत रहै तखनिये कियो देखि लेलकै आ चुगली लारि देलै। ए
बात पर मझिला मालिक तानने आगि भऽ गेलखिन आ·········।

हमर बाबू मरि गेल। दाइ कें चोठइया जर लगैत रहै। किछु मालिक
सँ लऽकऽ आ किछु इमहर-उमहर सँ साकि-डेरि कहुना किरिया-करम भ
गेलै। हमरा गरदनिक खतरी कहुना टूटल। माइ या दाइ दुनू गोटे
विचार भेलै जे कोनो मालिकक पट्टी मे हम चरवाही करी। दाइ नइ माने
ओ कहै एखनिये सँ काम मे जोति देबही तऽ करेज टूटि जेतै। मुदा माय
कहलकै—एखनिये सँ घरक काज-किरिर नइ करतै तऽ अवारा माहि
करत।

किछुए दिनक बाद हम छोटका मालिकक महिंसक चरवाही करे गेली
छोटकी मलिकाइन कें हमरा रखबाक कनिको विचार नइ छलनि, ओ घर मे
लठबज्जर कऽ देलखिन। हमरा देखिये कऽ ओ हाकरोस करऽ लगलखिन
ई तऽ बखाड़ी छुनछ कऽ देत। अकादाकन पेट छै एर छौड़ाक। डेढ़ सेर
दिन मे खेत आ डेढ़ सेर राति मे। साँसे देह छौड़ा के पेटे छै। पेट है
की कोठि से नहि जानि। मैए गे·····मैए·········।

हमर दाइ हमरा दिस दुलार सँ ताकि कऽ मलकाइन के कहऽ लगलनि—
से नहि कहिओ मलिकाइन। हमर बजचनमा बड़ कम खाइये, रोटी, मकई,

दो, साग, काउन जे देबै खा लेत। खेबा-पीबा मे कनिको बखेड़िया
रहबे।

हम एकटा चिल्ली पहिरने रही। चिल्ली दिस तकैत मलिकाइन
कहैलखिन—आ·········देख, कपड़ा-लपड़ा हम ने देबै। ई सुनिकऽ दाइ
गर ईं लऽ लागलि।

अइपर दाइ कहलकैन—अहाँ नइ देबइ तऽ के देतइ? अहीं बाउर के
जुइठ-कूट खा कए, अहीं बाउर के फेरन-फारन पेन्हि के हम सब अपन
अनगी गुदस्त करइ छी। अन देबइ आहाँ त पोन कांपऽ खातीर सूत अनतऽ
कतऽ सँ अउतइ?

अइपर मलिकाइनक आँखि-मुँह चमकऽ लगलैन। दाँत दसुफक फूल, ठोर
तलकोइक पाकल फड़—लगो, बड़ सुन्नरि रहथिन मलिकाइन!

एकहक आङुर कें चिबा-चिबा कऽ बजलीह—खायक दिअइन, धड़िया
धोती दिअइन, ऊपर सँ दुअन्नी! बापरे! एते के देतइ? सभ टा काज
सिखाबक पड़त, दुकबइत-दुकबइत मगज चालनि भ जेत।

दादी फेनू मलिकाइन के पैर धऽ लेलकइन आ बाजलि—थाइ सँ अहीं
बजचनमाक माए-बाप भेलिअइ! अहींक अइंठ खा कऽ एकर दिन घुरतइ
महतमाइन!

तकरा बिहाने सँ हुनका ओइठाँ हम काज करऽ लगली। ओना रहिअइन
तऽ भइँसिक चरवाह, मुदा आनो कते तरहक काज कऽ दिअइन। नेनाकें
टगने रहिअइन, पानि आनि दिअइन भरिकऽ, दोकान सँ नोन, कडू तेल,
मसाला सुना दिअइन, जारनि सेहो दिअइन।

मालिकलोकनिक ई घरैना कोनो जमाना मे बड़ पैघ रहइन। आब जमी-
न्दारी तऽ कम्मे सन छलइन, मुदा बाजब-भूकब उएह। माल जाल चारि पट्टी

मे बाँटल । हवेली से फराक-फराक । गाछी-बिरछी, बँसबारि, कलम, खढ़ोरि, पोखरि, परती-परांत—एतबा धरि साझिए रहइन ।

छोटजन मालिक कहुँ मनेजरी करइत रहइथ । मलिकाइन बड़का घरक बेटी । हुनका लेखे बिना दूध-दहीक खेनाइ आ गोबर थापल सिड़नाइ एक्के बात । से, ई गुजराती महींस दू साए मे ओ मङबने रहथि । सेवा तेवा त होइक नहि, आ पाड़ी गेल रहइ मरि । तैं बिधुकिये गेल रहइ । दुहाबरक हाड़ झक झक करइ । चरबाह पड़ा क कटिहार चल गेल छलइन । तखन कोनो दुसाध रहल । ओकरा एकटा गोआरिन सँ हेम-छेम भऽ गेलइ । पकरल गेल त बड़ मारि लगलइ । मझिला मालिक बड़ड़ा देलथीन ।

आब तेसर चरबाह रहिअइन हम ।

अन्हरोखे महींस खोलि दिअइ । पीठ पर पड़ि रहिअइन ।

पहुँची मैं सोहरिक धीर लपेटि ली । भूत-परेत त नइयें सहीत लग आबए नइ ; तहन खेतक फसिल चरि जाइ त अलबत्त । चरबाह कैं एकरे डर, आन कथूक डर नहि । मुदा हम जे चरबाही पेलो से मास रहइ जेठक । बाध-बोन खाली । चित भऽ कऽ महिंसिक पीठ पर पड़ि रही, आ अपन मुँह गारने रहए ।

किछुए दिन मेल हेतइ कि ओ हमरा चीन्हइ लागल । अइ सँ पहिने माए, दादी आर रेवनी, इएह तीन गोटे हमर अपन रहए । आब महिंसिओ हमरा लेखे अपन समाङ भऽ गेल । लाल-लाल पैध-पैध ओकर आँखि, भफलहा सींघ जखन हमरा बिलरल नइ अइछ ।

भैंसी चरा आबी त बासि भात खाइ, कहियो कहिओ एक छप चाउर भेटए त सएह मिला क फाँकी । कहियो अन-बड़िअनाअए मड़ुआ, की खुदीक रोटी पकइ तऽ तही मे सँ तोड़ि क आधा चाहे एक कोन हमरो परि लागए ।

तखन कुकुर कैं कोरा लिअइन । दुचकइ रहथीन, से बड़ खिसिआइ । तेना कैं भम्होड़थि जे की कहिअइ ! मलिकाइन केर दू टा नेना मरि गेल रहइन, ई तेसर कोरा मे रहथिन । आब चारिम हेवा लए रहइन । नहिराक एकटा दुलरुआ खबासिनी रहइन से तकरो जेना हम बहिए रही । बाँहि दर्द करऽ लागए तऽ हम कुकुर कैं लऽ जाऽ कऽ ओसारा पर बइसा दीअइन आ बलान दिस चल आबी ।

काजक डरें छौंड़ कटइया जोड़िआ !—मलिकाइन चिचिआइथि, आ से अही काने हम सुनी । बइगने तऽ काज चलनिहार नहि ! खुरपी आ छिट्टा लऽ कऽ घास करए बहराइ । बइसकला खरमनड़ल । झारि-धुर धऽ धऽ धऽ धऽ जरइत । भरि बाध ओन्हराइ तखन जाऽ कऽ पथिया-आध पथिया घास । घूरी तऽ आबऽ मे कोनो दिन बड़ देरी भऽ जाए । तहिआ गिरहथनी ललकि उठथि जे मार जनिपिट्टा कैं ! कतऽ निखतर चल गेल रहएँ ? कोन टा बहिन कैं कोन बापक संगे कलही भजइ छले हएँ ?

कहियो कहिआ चारि चटकन भइओ दइथ । तइ दिन बेरिआ धरि कनपट्टी लहरए......

खुशी रहथि त मुलाएल-टटाएल पकमान, अमरुत आर पिलुआहा आम, कुकड़ी लागल बड़ी, माछक तेबाहि कोर भेटए । तइ पर कहइथ की तऽ एहेन बस्तु तोहर एकइस पुरखा नइ देखने हेतउ ! बुझलहु !

नइहर सँ भार-दौर बरोबरि अबइन । खगता कथूक नइ, तइओ मालिक परदेस ओगरने रहथि । बङ्क मे जमा करइथ । आसरम छोट आ खर्च नापल-जोखल । गहना-गुड़िआ बर्तन-बासन, नुआ-बस्तर, रेसम-पटोर सं चारि टा बाकस भरल छलइन, तइओ महा-सोनाक बीच आंगन मे ठाढ़ि भऽ कऽ मलिकाइन नित्तह दीनानाथ-दिनकर सँ धन-बीत गछथीन्ह ।

महीस हम नोन सँ चराबी। गाछी मे, जबाइ-तबाइ गामक चरबाह सभक जुटान होइ। हमहू आइ गण्डलो मे बेरो दिन धरि अनसुआर नइ रहलउँ। एक्के बतारोक तऽ लोक चरवाही करइत रहए। अढ़ाए पहर राति मे जे महीस खोलिअइन से एक्के बेर मुन्हारि साँझ कऽ अबिअइन। अपन-अपन दुख बिसरि जाइ, आ खूब खेलाइ हमरा आउर। कउखन कउड़ी, कउखन तास-घरा, कउखन कबआ ढूढ़ी कखनो बाघगोटी आ गंगलष्ठान, कखनो कलम मे गाछ पर चढ़ि कऽ डाल-पाती......किलिम किलिम केर खेल हमरा आउर खेलाइ। गोल बान्हि कऽ बइसी, सबूरी कका बड़की टा खिस्सा कहए, कान पाथि कऽ से सुनइत जाइ। चर-चाँचर सँ डिमउर-कइहर-सारुख उपाड़ि अनइत जाइ, से तोड़ि सोखि कऽ खाइ। पतलोक आगि मे हरका कऽ अन्हइ माछु पकाबी त कहो भाँग लगाबी कहिओ-कहिओ। भरि गामक बाबू-भइया लोकनि केर अदगोइ-बदगोइ हमरा आउर करिअइन। नीक-अधलाह सब कथुक चर्चा होइ।

सबूरी रहइथ नाटे। आखिक चानुक। कान कुनू-कुनू रहइन, कपार छोट। आँखि बेरा तेन दुटा बसल। अपना मालक सेवा ओ खूब मान लगाकेँ करइथ। चरवाह सब हुनका अपन पित्ती-पितामह जकाँ मानइन। मड्ड कहिओ कोना भैंसी के मारने होइथीन, से हमरा लोकनि कें कहा देखल, हुनका भैंसीक आँखि मे कहिओ केओ कांची नइ देखने हेतइन। भरि छाबा पानि मे ठाढ़ कऽ कऽ कूचिक कूची सँ ओ महिसीक पोठ-पेट मलइथ।

एक दिन हम दुपहरिआ कँ सबूरी ककाक ओतए गेलउँ। बड़का मालिकक बथान बेस पैघ रहैन। सोलह टा बड़द आ चारि टा भैंस। तकरा लए तीन गो चरवाह। बूढ़ा ठामहि एकचारी मे रहइ छला। देखलिअइन हुक्का गुड़गुड़बे छथि हमरो नू झाँटकी नारिकेरवला हुक्का पिअइ छथि।

नजरिक इशारा सँ लग मे बइठऽ कहलनि आ फेनू पुछलइन जे तोरा महीस के ई दोसर मास थिकउ की ने।

हमरा अजगुत लागल। कहलिअइन—कका, आँ कोना ई बात बुझि गेलहक?

बाहार पतरकी मोंछवला हुनक उपरका ठोर फइल भ गेलइन, बजला—रओ, चरवाहिए मे त हमरा आउर के जिनगी गुदरल गेल, एतबो नइ बुझबइ?

हुक्का खम्हेलीक भरे ओठ्ठा देलखीन, तीअम अउग्नि कँ फेनू बजला—मलिकरसँ भागि क आएल रहितउ त बाइसन बर्ख रहए। तोहर बाप लालचन तोरे एती टा छल हेतउ......आऽऽहे ऽऽ, बुझलएँ? बड़बेर महीस तोहर पाछीतरे बिएतउ......"

तखन मड्ड उकला आ बुढ़िआ भैंस लग जा के थनसिस बइठि गेलइथ। गहिकी नजरिसँ अठउड़ी बीछऽ लगलखीन।

सबूरी कका हमरा बड़ मानइथ। हमरो हुनकर टहल टिकोरा मे बेस नीक लागए। ओना हम रही बड़ गोआर, आ चानुक। हुटा से नहि कहिओ बूझि पड़ल। खाइ पिबक कोनो चीज-बस्त देहीन थँ हवेली सँ भेटइन त तइ मे सँ हमरा लेल किछु रखबे टा करइथ।

मझिला मालिक के छुट्टी कम्मे होइन, तइओ छ मास पर छुट्टी लऽ कऽ दू चारि दिन रहि के बिदा होइथ त इसटीकन बिछौना बिस्तरा उठइत-बइठइत कहुना हमही दऽ अबिअइन। गाम सँ मधुवन्नी अढ़ाए कोस पछिआ। घाड़ टूटि जाए एक लेखेँ। घामे पसेने नहा जाइ। आ तहन गाड़ी लाटफारम सँ घुसकए लगइ त मालिक दू गो पैसा हमरा दिश बीग दइथ।

पइसाक मूढ़ी, आ पइसाक बीड़ी। फँकैत-फुकैत गाम आबी घुरि कऽ।

हमर माए अइ घर मे बिअहुता भऽ कऽ नइ आएलि रहए, सनन्ध भेल रहइ। बाबू कमाइत रहइ टाका दिस कतऽ, पाछू त जिनगी गामहि पर रहल। सुइल त हमरा आवरके बड़ा तातेक खेल दऽ गेल। थोड़ू जमीन पर मझिला मालिक नजरि गड़औने। कहिया कतऽ दस बारह गो टाका देने रहथीन सादा कागज पर अउँठा छाप लऽ कऽ। से सूदि दइत दइत सब हमरो सब लिखा गेली, कर्जा नहि छिआएल हवो भाइ!

मलिकाइन दुअन्नीक हिसावेँ भरि सालक दरमाहा डेढ़ गो रुपइआ आगाँ पाछाँ देथिन तइसँ की होअए? जड़काला‍क राति परलयकेर बनल बजबइत आवए। गर्मी आ चउमासा त कोनो तरहेँ खेपि ली, मुदा जाड़ कटनाइ पहाड़ भ जाए। ओछाअए खातिर दू आँटी नार पोआर आ देह झाँपए खातिर गुदरी केथरी……एतबो जँ नइ जुरए त पूसक राति जमराजक सहोदरे बहीन। धूड़-धुआँ लेल चाही गोइठा-करसी। से तऽ चेत्रेक साल-सालक हेतइ नहि। हमरा घर मे माल जालक नाम पर दू गोट बकरी टा छल। हँ, बकरीक मेंड़ारी जाड़काला मे खूब काज अबइ ततबा घरि मोन अछि।

बुढ़िआ पोखरीक भीड़पर बड़क गाछतर कोल्हु ठाढ़ होइक। बाँसिक खाम्हखम्हेली, बाँसिक पाढ़ि, बाँसिक बरेंड़ी……पतहर सँ छारल बातीक चार, मास डेढ़ मास लए कोल्हुआड़। तहिआ कुँइख खूब पेरल जाइक आ खूब गुड़ बनइ। हम दुनू भाइ-बहीन कोल्हुआड़ मे बेसी काल रही। बरद हाँकि दिअइ, कोल्हुक ठीरतर कुसिआरक टोनी बहत रहिअइ, भट्ठी मे पतलो झोंकिअइ, खखोड़ि खखोड़ि क कड़ाहक पेट साफ क दिअइ……बदला मे खूब कुँइख चिबाबी, रस पीबी, गुड़क ढाढ़ी खाइ आ राति कऽ भट्ठिए लग गरमा क सूति रही। कहिओ कहिओ नानी उठा कऽ लए जाए जागय त केओ बाजइ—

"छोड़ि ने दही, घर मे कोन दोलाशा छउ जे अइ जाड़ मे ओढ़ैबहिन, भने तऽ सूतल छउ!" जड़कालामे मास दू मास सब साल अहिना चलइ।

एक दिन मझिला मालिक माए केँ चाल पाइलखीन। पाछाँलागल हादिओ गेलइ आ हमहू जुनकिअइ। दलानपर बड़का चउकी, तइपर पटिआ ओछाओल। मालिक तऽ छलाहे, गामक बूढ़ा पण्डित सेहो रहइथ। मालिकक हाथ मे पितरिआ ढाङ बला सरौता छलइन। सुपारीक कतरा पंडित जी दिस बढ़बइत बजलाह—बलचनमा जा बील ता हमरा उसाव देत रहल आ कने एकरा लोकनिक रुखि तऽ देखिओ…

पण्डित जी कतरा फाँकि लेलइथ, दुइलाहा कमानी बाला चश्मा नाकपर सँ हटा कऽ कपार पर चढ़उलैथ। कनीकाल धरि हमरा दिस तकइत रहि गेलाह। फेनू कहलखीन—जशोधर बाबू, अइ छओंड़ाक त बुट्टी बुट्टी चमकइ छइ? ईह, तकइए केहेन हुलुर-हुलुर!

मझिला मालिक गुड़ुआ कऽ मूड़ी डोलउलइथ। सुपारी चिबबइत बज-लाह—ई गुरु, भारी हरमजादा अछि। ओइ दिन भोजपड़उलवाला ठाकुर आएल रहथि। खवास कने दुःखित पड़ि गेलइन तऽ कहा पठोलिअइ जे चाँति दइन आबि कऽ से नहिए ने आएल बदमसवा!

हमरा दिससँ दादी बाजलि—आँखि पीचब सँ चेतनक बुते ने होइत, बालचन तऽ लड़ुका छैह थीक। तहूपर भरि दिनुका थाकल-ठेहिआएल, राति कऽ की कोनो होश रहइ छइ गिरइथ?

मालिक डटलखीन—"चोप।"

पण्डित जी नजरि नचबैत बजलाह—"राड़ँ एवँ पवित्र" मुदा मालिक केँ तऽ अपन मोटी कड़ुना लाल करबाक छलइन। मिठबोला बनि माएकेँ कहए लगलखीन—बलचनमा-माए, तों तऽ जनितहि छेंएँ बेर-कुबेर तोरा लोकनिक

खातिर हम कहियो अपन पाएर पाछाँ नहि कएल। दू बेर काज पड़लउ, तऽ चारि देलिअउ, पाँचक काज पड़लउ तऽ दस। परिवार जेहने अपन तोहरो परिवार हमरा लेखेँ तेहने। तखन की तऽ काज-परोजन भीड़-भाड़ ने कहखन परिवार हमरा लेखेँ तेहने। तखन की तऽ काज-परोजन भीड़-भाड़ ने कहखन तोरा समक अभेला-कुभेला तेहो होइ छउ. से नहि, मुदा महतो-आ बहिया दूनू दू नइ होइ छइ, होइ छइ एक्के। आन केओ काज नइ अबोलउ, कन-फुका पुछक कौन-कमी ?

तहन फेनू हमरा अपना लग बजा लेलैथ, पीठ-पाँछुड़ पर हाथ फेरऽ लगलइथ। माएकें कहलखीन—बलचनमा-माए, तोहर दिन आब जल्दिए घुरतउ ! बेटा कमा कँ टाल लगा देतउ ! दुख थोड़बे दिन रहलउअए।"

माए बलचनमाक टाड़ी भेल ठाड़ रहए। ओकरा ई बुझइ मे नै अबइ जे मालिक कौन नाटक कऽ रहलैथ अए। दादी गुम-सुम छलि। हमहू रही इकटके। पण्डित तमाकू चुनबैत।

पण्डितजी बजलाह—जे बहिया मालीक हुकुम मानए ओकर जनम फेर बहिया भऽ कऽ नहि होइ। आक-तमाक की छीक तऽ नाइट छीक। अइसँ जतबा उपकार होअए ततबे फल।

तखन मालिक एक बेर हमरा दिस तकलैथ, एक बेर माएक दिस। कनी काल रहि बजलैथ—कालिह छिकइ शुभ, परसू बिरहसपति, खजटली चलिहैं कनी......।

हमरा घरसँ पच्छिम मालिकक भीठ खेत 'तिनकोनमा' रहइन। कठा दुइएक हमरो जमीन ठामहि रहए, ओटकिनमी कोली दूनू मिला देला सँ चौकोर भऽ जाइत रहैक। मालिक कें ओहि जमीन पर नजरि छलइन।

माए हमर गुम्मे रहलि, दादिओ। हम तहिआ ई सब किछो बुझअइ नहिए। तमाकू थुकरि कऽ पण्डीजी बजलैथ जे ओ जमीन राखि कँए की करबे !

कहिओ चारि सेर मड़ुआ, कहिओ चारि सेर सुथनी, कहिओ पथिआ-आध पथिया अल्हुआ...। हम तऽ ओइ उसरहा कोली मे कहिओ हरिअरी नइ देखलिअउ !

दादी मालिकक पाएर छानि लेलकइन, कलपए लागल—दोहाइ सरकार कें, ललुआक बरजल जथा आब इएह टा रहि गेलइए। एमरी छोड़ि दिअउ मालिक ! अहाँ आउर के कथीक खगता अइछ...

मालिक हूँ हूँ हूँ हूँ करैत अपन पाएर हटा लेले रहइथ।

हमर माए कहलकइन —ई जमीन घरक नगीच पड़इ छइ। धिओ पूता चारि दाना छीट दइ छइ त कुछो ने कुछो भइए जाइ छइ। बदला मे कहउँ अनतऽ दू कठा खेत देथिन से लाऽकऽ उपजउतइ ? दस बरखक टेल्हक छुते कोनाके सम्हरतइ, ईहे कहउथ ?

मालिक एठला। देबालक खुट्टीमे चोंगा टाङल रहइ, तइसँ नीमक खड़िका बहार कऽ अनलैथ। दांत खोधइत बजला—हम सबटा ठीक-ठाक कऽ देबउ। एतेे खेती-बाड़ी होइते छइक, तोहर दू कठा रोपल जेतउ सेहो कोनो दिन पुछि कऽ ? हर-बड़द, बोनि-बीआ जे लगतउ से अगहन-पूसमे दऽ देल करिहइ।

हमरा गोंक जकाँ मोन नइ अछि जे कोना माएके राजी कऽ लेलथीन मालिक आ कोना लिखा पढ़ी भेलइ। ओ दूनू कठा खेत धरि मालिक कें भइए गेलइन। बदला मे धानक खेत के कहआ जे अबँठाक ओ पुरनका निशान परजन्त नई आपस भेल।

मलिकाइनिक ओइठाँ काजक कोनो कमी नहि। भरि दिन किछु ने किछु लगले रहइन। हम कनिको बड़ओ, से खबलिनिआ कें नइ सोहाइ। ओ हमरा कखन दाबुत कहए, कखन भकोल। ई खबासनी मलिकाइन केर

लोक ओकरा मलिकाइनिक लाजी कुकुर कहइक। से, ओ मउगिआ जखन अबाच-कुबाच कहए, तखन हमर रोइआ ठाढ़ भ' जाइत। कोन गत्त तीड़ि कँ पड़ाए तऽ हम ओकरा सँ बहारी।

पछाति दुहनाइओ सीखल, ललुरीकका अहू मे हमर गुरु भेलइथ। हम पाड़ीक मोहँ दूध छोड़ि दिअइ से मलिकाइन के नइ नीक लगइन। नवढ़ खवास सँ अपन भैंसी दुहावऽ लगली तऽ हमरे मेंढ़िआ देलिअइन। मारल रहइन दुनकर आ दूहि चलेत हमर !

मास तिनिएक मेल हेतइ की पाड़ी मेलइ मरि, से के मइँस बेचारी चुकरए ! की कहिअ...हमर कोन साध ? तखन बाबा कपिलेसरक दूहे मोन रहइन तखन आन के की करितइ ? मुदा एगो बात कहि दइ छिअ...हम आ की ललुरी काका दुहइत रहितिअइ त पड़रू बेरबाद होइतइ ? कित्तउ नइ ! की महिषक खुलइन, बड़ गलवरि। देखबामे पेस, सुनवाने फूटल थारी। दुनू बाँहि पर बसुली बजबइत मगमान गोदज छुलखीन। पहुँचो मे चरि चरि टा लहठी, पाएर खाली ! सूति-पाति से कनकन करइत। चाकर दाढ़िक लजा-बोल साड़ी पेन्हि कँए जखन ओ बहराए तखन बड़ नीक लगइ लोक के। अनकर तऽ की कहिअ मलिकाक नजरि तखन ओकरा दिस नइ उठइ। मालिकक नवढ़ खवास सेहो बकर-बकर तकइत रहि जाइ ओकरा दिस...

नीक-निकुत चीज-वउस मालिकक ओइ ठाम जहिआ कहिओ खेने हेबइन, तहिआ पइले कोइठ। आब अंइठ खेबाक रोक थाम भऽ गेलइए। हमरा आउर अपनो चूकऽ लगलिअइए के ऐंठ खेनाइ महा खराप काज थीक। मुदा पहिने ई ध्यान नइ रहए हमरा आउर के। अपना गामक धानुक, गड़ेगोआर आ केओट के बाबू-भइआक ऐंठ खाइत हम देखने छी। आब मुदा हमरा आउर कोनो बाबू भइआक जूठ नहि खाइ छिअइन।

पाहुन-परक अबइन तऽ तुलसीफूलक चाउर बहराइ, रहइ—मोदनी पिटबवल जाइ, कुजरटोलीसँ मुलकी तरकारी अबइ, दूध-दही सहजहि। थारक चारो कात बीस-बीस टा चालीस-चालीस टा कटोरी। सिरहुतिआ भलमानुस आ बबुआन आउर के ओइ जकाँ खाइ-पिअक बड़ चहटकार। अंइठ मे तते रास ने चीज-वउस रहि जाइक जे दू-दू तीन-तीन साँझ हमर पलिवार हुमचि-हुमचि कए से सब खाए। खाइत काल दादा बुझाबए जे बउआ ई थिकउ कटहरक बड़, ओ थिकउ रहूक पेटी, ओइ कात सकरउड़ीक भुजिआ, एह ! बड़ीक झोर केहेन निम्मन छइ ! चटनी मे पुदीनाक पात पड़ल छइ। दालि केहन सोन्हगर...मुदा अपना मलिकाइनके हाथे छोट छइन, जेठकी बहुअरिया जकाँ कहाँ थार सँठइ छथुन ? पाहुन जऽ लजाधुर नइ रहथि तखने पेट भरतेन।

काज-परोजनमे जेठकी आर मझली आर छोटकी सब बहुआसिन के ओइ जकाँ हमरा आउर अइँठ-कुठ हँसोथि लाबी गऽ।

पाहुन सभक ओही अइँठ गरिबहा के भागे सँ भेटइ। बात ई रहइ जे मालिक जकाँ बहिओके आब कुटि कऽ कए टा पलिवार भऽ गेल रहइक। हमरा आउर मालिक-मलिकाइए अपन बखराकऽ लेलेरही। छोटका मालिक हमरा बखरा मे पड़ैथ। कहिओ कहिओ बाँट-बखराक ई सिमान टुटिओ जाइ। से तहिआ होइ, जहिआ उपनैन-मुड़न-विआह-दुरागमन आ सराध-बर्खी रहइन।

पुरनका हवेली बड़का मालिकक हिस्सा मे पड़इन। हिनका आउरके एगो निसन्तान पित्ती छलखीन, हुनकर हवेली ढण्ढ मण्ढ पड़ल छलइन, मझिला आर सझिला मालिक तकरे मरम्मति करा लेलैथ। छोट जन अपना लए ई नवे कोठा तइआर करउने छलइथ।

ई हवेली खपड़ावला पोखरा पाटन रहई। बीच मे पइल आङन। दुटा

बखार से तहीं मे उत्तर दिस ढाढ़। मकानक सरजमीन सीमटीसँ पलस्तर कएल। जकरा केबार सीसौक। चारू कात चाकर ओसारा। दछिन-पूब कोनमे तुलसी-चउरा, हनुमान जीक धाजा गाड़ल। लाल पतकडावर फहरैतीक ऊपर महावीर जी सीबल, बड़का नाआँड़िबला। पछबारि दिस बहरैवाक रस्ता, बहार हेवाक दरबाजा के बन्न क देला सन्ता एक दोसरे संसार। दरबाजा सँ सटले छोर पर टूटा कोठरी। सोहामे पेरल सरदान। उतरबारि कात माल-जालक घर। बीच मे काठक ननहर लादि, तकरा दू-दू दिस-दू-दूटा खुट्टा। कने हटि कऽ सीमिट केर लाल हौद। ई रहइ मैंसिक खातीर।

बढ़इक सेवा हरवाह करइन। हमरा जिम्मा खाली भैंस। गाए एको टा नइ रहइन। जकरा सामरथ छइ से भैंसे रखइए, गाए रखनाइ दलिद्दक काज।

हमरा मालिकक पट्टी मे नगदी बेस जमा रहइन। दुचा नानिक बीस हजार रुपइआ गाड़ने रहइथ, बात सब होत की फूलि, दुदा लोक तऽ से कहथे करइन। उपजा तीइन हजार मोनक। भादव-आसिन मे बखारक मुँह फुजइ, तहन केओड़ा-सवइआ पर जकरा जसे देवाक रहइन से देथिन। किछु बेचबो करइथ। अढ़इआ-पसेरी कइएक गेल के रखने छलइथ। एक बेर पूसमे फूदन मिसरक मसोमात धान देमऽ एलइन। अपने उचि उचि कऽ अनने रहइ। कहलकइन—तउलल छइ, मलिकाइन, सात मोनसँ बेसिए अनलवँ हइन, तइओ ओजा लिअउ।

गिरहथनीक हाथ बामकल रहइन। हमरा चाल पाड़लइन। कहलइथ जे छौतन कामइतके बजा लबहिन गऽ, तउलिओ लेतउ आर हकमे दारिओ देतइ।

छौतन कामति केओट रहइथ। मालिक कठा दसेक खेत देने रहथीन।

बढ़िजना छौतनीन कामति। बारहो मास लागल भिड़ल देखिअइन। अबेर-सबेर, राति-बिराति, समए-कुसमए जहन परोजन पड़इन, तइखन मलिकाइन हुनका बजबा लेथिन।

छौतन कामति एलइथ। उतरबरिआ अङनसँ तराजू अढ़इआ अनलइथ फाँड़ बान्हि कऽ बइसला आर तउलऽ लगला—रामहि राम, राम...राम... राम: रामहि राम, राम राम दू; रामहि राम, राम राम तीन... की बीचहिमे बराम्हनी नजरि नचा कऽ बजलइ—हँ हुँ, कामति, ओ अढ़इआ कहाँ थिकइन ई? कने ऊरधु, तकधुन गऽ।

ता ओमहरसँ गिरहथनी बिजुलता जकाँ चमकि कऽ हड़-हड़इली—बेस, आब किए ने सूझत! तखन अनपुर्ना-लछमी कहिकऽ, कनकर पाएर नइ धेने रहिअइ जा कऽ! बेर पर धान नहि देने रहितहुँ हम तऽ तकरे से गाम के बरम-बध लगितइ! फेर नहि मादव अउतइ?

मसोमात गुम भऽ गेलि। आन उपाइओ तऽ नहिए रहइ।

धान तउलल भऽ गेलइ, दू पसेरी ऊपर सात मोन भेल रहइ। बेचारी के एक पथिआ धान फेनू लाबऽ पड़लइ।

अहिना एक बेर करिमबकसके सेहो छिलमिलाइत देखने छिअइ। ओ हरवाह रहइन। बोनि देबामे जे गड़बड़ सड़बड़ करथीन से तो ओहिना मोन अछि। पसेक लरम रउदा देखा कऽ बोनिबला धान हकमे रखबा लेथिन। तहन हिनका ओतऽ एखटा बात नीक अबस्से रहइ जे बेगर्ता पर रुपइआ दू रुपइआ लोक केँ भेटि जाइ, दस-पाँच पनरह-बीस लए ककरो घुरऽ नइ पड़इ। सूदि मुदा बड़ कड़ा। डेढ़ पाइ कखन, कखन दुइओ पाइ ठेका देथिन।

बर्खो दू-एक अखार बइसाख बितइत बितइत हमरा जबारमे तहिआ भइए

जाइ, आब समए पर वर्षा नइ होइ छइ। रोहिनी नछत्तर मे धानक बीआ सँ ठाम ठीम बाध खेत लहलहाइ तहिआ। मिरिगसिरा-अदरा मे अगला रोपनी सनपन भऽ जाइ। साओनक पुरनिमा धरि बनहर खेतक कोनिओ टा कोली कलऽ खाली नइ रहइ। बिराड़ लमारस भऽ जाइ, ओहूमे गडब धऽ कऽ खेतिहर निफिकिर भऽ जाए। नदाइ, गमहडी काटि कऽ ओइ खेत मे फाउड़ राति लेअउ तइन दलान पर बइसिकऽ पचीसी खेलाए।

हमरा समक परोज्हामे नहरि नहि छइ। अखनधरि इन्द्रे भगमानक भरोस पर लोक निमहल जाइए। कमला महआ हँहबइ छथीन त पहिने कनबितो छथीन बेस।

दरनी आर कडनी काल मलिकाइन नइहरसँ जन मङाबइथ। साकुति रावऽ लए बिलिअडइ रहथीन। ठामहि कनी दूर पर मुसहड टोली रहइ। गाल माथ, छोट छोट आँखि, दिआरो सन नाक आ देहक रङ छाउर जकाँ मुदा इमनदारी आर मेहनति मे मुसहरक मोकाबिला आन कोनो जाति के नइ कऽ हेतइ नन्हाको आले अन्हऽ नहिए पएबइ। ओकरा आउर पचीस बीस समाक खुल हएत। बुढ़-बुढ़हक हेबा त नहिए हेतइ। लग-पास मे दस-पाँच टा जमहर बस्ती आरा छलइ। अछाड़-साओन मे जन-बोनिहार नइ जुमइ लोक कें।

खेतीक दान रहइन त मलिकाइन माहुरपं भऽ जाइथ। दाइल-भात, तइ पर सँ अचारक फाँहा......आइर फूलल जाइ, बरइको बइकी गो टोकना चढ़इ, तीन-तीन चालीस-चालीस आदमीक सीधा लगइ। गाड़ीपर सितलपाटी धऽ कऽ तइपर लऽ केराक पत्ता बिछा देल जाइ। ओइपर भात आ टोकना मे दाइल। पक्के रागे तरकारी, डलिआ मे अचार। बीच बाधमे बाल्हपर गाड़ी ठाढ़ होइ। जऽन आउर जातिक मोताबिक फराक फराक पतिआनीमे

दूरिपर बइठए, झौतन केराक पत्ता पर अन परति देथीहिन। तरकारी आर अचार देहो। अऽन सब भरि पेट हूरि लेअए तखन फेर रोपऽ लागए।

मोन तऽ होए हमरो धान रोपबाक, मुदा काज एमहर बढ़ि गेल रहइ। मैंसी आब एक गो नहि, दू गो रहइ। भिनसर चराकऽ घूरी त बथान खरड़ी। गोबर काढ़ि कऽ एकठाम जमा केने जइयइ, निछड़ेस दोसर ठाम। गोतलाहा जगहक थाल काछि दिअइ। ऊपर सँ पथिआ भरि बलुआही माटि पसारि दिअइ। अइ तरहे मैंसीक लागह कें हम स्वच्छ राखी। गिरहथनीक भाइकेर घोड़ा रहइन, तेकरो लिद्दी हमरे उठाबऽ पडए। लादिके धो-धा कऽ पवित्तर राखी। दलानक अङनइ खरड़ि दिअइ। खबासनी कोनो ने कोनो काज मे अढ़ौनहि रहथ—दलमनि ला, दीवान लो, तूआ खोंच दहीन, फल्ली के सोर पाड़हिन, मसल्ला पीस, दव ने पइस, धान बहार कर, चिठ्ठी खगा अबहीन, पत्ता काटि ला, पीठ खुनि दहुन, बुलुरकें बुला लबहुन ......देखहीन केवल पतली खरड़इ छउ कलम मे, सुनइ छहीन बसबारी मे कोदन ठक-ठक हइ छइ......खवासिनिया नथनहि रहए हमरा सहरिआल! ने दस गो, ने बीस गो, रही त बलचनमा हम एक्के गो। मुदा ई बात बुझनिहार ओइठाम केओ रहबे ने करइ!

अइ खवासिन केर कोखि जरल रहक, पिआ-पूता सुनइ छिअइ भेबे ने केलइ। हरकलही गाबए केहेन दोख! आर गबइत-गबइत खिसिआ उठइ, खिखिआइत कोहि पाड़िकऽ कानऽ लागए—

गास दू माल पर अहिना ओकरा भूत लगइ। पहन खन छरपए, खन कूदए, खन टाल ठोकए, कोंचा खोंसि क नाङट भऽ जाए, तीह बहार कऽकऽ चिचिआइ......हम काली महआ थिकहुँ, बुढ़िआ पोखरिपर जे गुलरिक गाछ छइ तहीपर रहइ छिअइ......ओझा डागर चढ़ा, ने तऽ सबसे गामकें

भूजि कऽ खा लेल......

मलिकाइन कुमारी भोजन कबुला करथिन, रेशमिक अंचरा आर ओढ़ा छागर से कबुला करथिन। हमरा कहथि, दामो ठाकुर के बजा अनइ गऽ। दामो ठाकुर तानतिरिक रहइथ। झाड़ फूक, पूजा पाठ, टोना टापर सब जनइ छलइथ। आलक रंग मे रंगल धोती लवनी पेन्हइथ। कपार पर सिनुरक बड़की टा ठोप। टीक तते पइथ छलइन जे फोलि देलापर पाछू दिए डाँड़ धरि चल अबइन। हाथी दाँतक गोटीक माला से लाल रेशमी मे गाँथल दू टा मूड़ा, आर तेकरा बीच मे बड़की गो कदराछ। छहीक मूड़ठ सपनखरक मुँह सन रहइन।

दामो ठाकुर गाम मे बहराइथ तऽ धिया-पूता आवर के बड़ डर होइ।

दामो ठाकुर आबथि दछिनबरिआ घर मे हुनकर आसन जमइन। मलिकाइन सोफाँ नइ अबथीहिन। बड़का मालिकक बेटी कमला रौंड़ रहइ, आर ओहो नहिरे बसइ। देखबा सुनबा मे सुन्नरि, डाढ़ नाक, ऐते आँखि। से एहना समए गिरहथनी ओकरे बजवा लेथीन। ठाकुर ओकरे पुछथीहिन, ओकरे अढ़बथीहिन। मूसक बीहरि केर माटि, तीन बर्खक पुरान कूश, चारि ठोप गंगाजल, पाँच गाछक सुक्खल पत्ता......एहे सात चीज बहुत भिखड़ा क दामोठाकुर खबासिनके झाड़ऽ बइसथि।

मलिकाइन ओकरा कोंचा मे कसि क गेंठ द देथिन। छौरान आर कल्लर धऽ-पकड़ि कऽ ओकरा ठाकुर लग राखि अबथिन।

सिद्ध जी मनतरा-मनतरा खबसिनिआक देह पर फूक मारथीहिन आ माटि फेकने जाथीहिन। हुनका आँखिक इशारा पबइत देरी हमरा आवर घर खाली कऽ दिअइ, रहि जाइथ ठाकुर अपने आर खबासिन। केवाड़ बन्न कऽ कऽ बहार सँ जिंजिर चढ़ा देल जाइ। भीतर सउन झाड़-फूक खूब

पेर धरि चलइ।

कती काल बाद भीतर सँ केवाड़ ढकढकाबथीन त एम्हर सँ जिंजर खोलि देल जाइन। घामे-पसेने भीजल सिद्ध जी बहराथि आ बजथीहिन जे बड़ जबरदस्त भूत छलइ देह खबासिन केर, कोनो धरैने देह छोड़लकइए से हमही जनइ छी......आँखि त बहराए नइ देथुन एकरा! कमला, ताकुबि रखि-हक कने!

भूत लगइ त खबसिनिआक वहे पड़ि होइजे पड़ि भदबारिमे कमला-बलान आवरके होइ छइ। ने लाज-धीज, ने डर-भर, ने मान-मर्यादा, ने थिरी-दम्मन, ने गेआन-परान, ने मेत-मीत, ने ठर-ठेकान, ने थीर-थाम। बाढ़िक पानि तऽ ने आरि-धूर बुझइ? भूत की जिन बांधि मछरी के देखतइ, ओकरा आवर के बान नइ सोहाइ छइ से त बुझले देतइ। बर्ख मे दू एक बेर मलिकाइनिक आङन मे हमरा ओकनि ई तमासा देखबेटा करी।

एक बेर गिरहथनी अहिना ओकरा घरमे बन कऽ देलखीन तऽ भीतर सँ लगलइ केवाड़ ढकढकाबऽ......तहन अनन्त बाबू बजाल गेलइथ। ईहे गिर-हथनीक भिसिअउता छलखीन, बेस डुबगर, बेस मोट डाँट! केहनो बदमा घोड़ाके अनन्त बाबू पानि पानि कऽ देथीन।

दूनू तिछ धऽ कऽ केहनो मरखाइ साँढ़ के ओ सए लग्गा पाँछा ठेलि अबथीन। से, मलिकाइन केर परताप सँ ओइ बेर भूतोक सके हुनकर लठा-वटी देखल। बड़ी कालपर बजारऽ देलकइन।

गिरहथनी बेसीकाल हमरा आवर के भूतक ओ कुश्ती नइ देखऽ दइथ। कहथीन जे बच्चु लोकक माथा मे भूतपिचासक तावेत चारि गून बढ़ि जाइ छइ। झाड़बला के खबसिनिआक संगे असगरे छोड़ि देथिन ओ, जोत्तोरी!

तिनिए चारि बर्ख महिसबारक काज हम केने हएब की दादी बड़ी जोर

बेराम पड़लि। ओ रोग ओकर जान नइ छोड़लकइ। पेटक बेमारी एक दीन, साँझक दोसर दीन। पुरनकी गाड़ी अंका दादी-देइक ऐल-कील भकठल छलइ, तपइर सँ ई बेमारी तऽ ओकरा सब टा गत पीचि लेलकइ। ओना गाम मे ककरो किछु होए तऽ मधुबन्नीक सरकारी अस्पताल सँ दवाइ लऽ आबए। बाबू भइआ ओइ लक सर्दी-खोखी होइ तहूमे डागदरे अबइ। बड़ाइ आबए। बाबू भइआ ओइ लक सर्दी-खोखी होइ तहूमे डागदरे अबइ। अठखदक दाम ऊपर गो रुपइया रहइ ओकर फीस, दू टका सवारी भाड़ा। अठखदक दाम ऊपर सँ! बाप रओ! हमरा आउर से पथ-पानि सेहो नइ जुमए बेरपर, कतऽ सँ अबितए डागदर आर कतऽ सँ दवाइ।

गाम मे एकटा बइदजी रहइथ, फतूरी मिसर। वेइ आबि कऽ देखलखीन। आठ-दस पुड़िया दवाइ देलखीन। बदलामे एक खखड़ा माहरी हमरा एऽ दावन करछलइथ। भादव रहइ की ने! रउदामे पित बगदि गेल। दादी के रोटी-सोहारी नइ पचइ, भखगोल भात एक बाटी खाइक। मुदा घरमे चाउरे नइ!

मकिला मालिक राति के हमरा सँ जँतवइथ। पोनपर बड़ी देर मुक्का लगवाबइथ फेर दोसर करोट फेरइथ। कतेकालक बाद छुट्टी पाबी। कए बेर कहने रहइथ जे जहन जे चाहिअउ से लऽ जइहएँ। अही भरोस पर सेर भरि चाउर मङलिऐन, एक दिन नऽ लुलुआ लेलइथ। पाछू पाओ-डेढ़ेक देबो केलइथ।

माए दादीलए एकमुट्ठी चाउरके गिन्हकी राइन्ह दइ।

एँठे महुंका भात अबकम रहइ, मुदा से सब दिना नइ। चउमासाक थालकीचमे पाहुनो-परक नहिए अबइ। भदवारि मे पहुनाइ करए लए नइ ने बहराइए लोक! पनिआल बाध मे भरि छाती धानक बीच ढने ककर मजाल छिकइ जे चलतै!

हमरा पलखतिए ने हुअए, बेरपर दवाइ आनि दितिअइ ततबो नइ।

दादी के हमर बड़ आबेस, हमरो ओकरा खातिर जान जाए। चरवाहिस पहिने धरि हम ओकरे बाँहि के गेड़ुआ बनाक सुतइत रही। केहनो चीज दादी कतव सँ आबए तऽ तइमे सँ किछु हमरो अवस्से पइर लागए।

मुइल तइसँ दू दिन पहिने ओकरा मोन भेलइ माछक साना सके भात खेबाक। चुग्रीक ओतऽ सँ बनसी आनल डुड़िआ पोखरिक दछिनबरिआ मोहाड़ पर गुलरीक ओढ़गे जगह ठिकिओलउं। चाली गोंथि कँ बोरि देलिअइ—पाथल बनसी गोसैंआक नाम लऽ कऽ। नजरि छल टरेड़ा दिस।

मलिकानक कयो अइ पोखरि मे ककरो बनसी खेलाइत देखइ तऽ गारि-मारि-फज्झतिक अन्त नहि रहइ तकर।

कनिएँ काल बाद टरेड़ा हिलकइ तऽ भखान-परान झुलम आबि कऽ आँखिक इनू डिम्हा मे मोस्तेब!

छगो छीपल त टेङराक दरसन भेल। डोरी गाछक डारि-पात मे ओकरा गेलइ। सोझरा लेल तकरा। तहन बनसी समेटल। गलफड़ ओ मुड़बाटें दुधिक डाँट पइसा कँ टेङरा कें लटका लेल। घूमि कऽ आङन अएलउँ। माए माछ पकवऽ लागलि की बीचहि मे खबसिनिआ घुमि गेल।

हाथ चमका कऽ बाजलि—चलह ने, आइ त बुझबे करबहक जे डुड़िया पोखरिक मछुरी केहन सोअदगर होइ छइ!

दादी ओछान पर पड़लि रहए। खबसिनिआके सरसरी सुनितें देरी ओकर आँखि खूजलइ। अन्हार मानिमे जेना खद्योतक नजरि चमकइ छइ तहिना दादीक धसल आँखिमे डिम्हा चमकइ। कऽल जोड़ि कऽ ओ चुप रहऽ कहलकइ खबसिनिया कें। हम माए के बुझा देलिअइ जे कोनो अन्देसा नहि।

खबासिनी आगाँ आगाँ, हम पाछाँ पाछाँ। बड़का मालिकक पछबरिआ दोमहलाक अड्डू दने बबइत रही।

अनापुरले पाछाँ घूरि कऽ ओ हमरा चुम्मा लऽ लेलक आर पँजिआय आगालि की देलिअइन दू थापड़। मारि कऽ पड़ा गेलिअइन।

ओइ दिन साँझखन गिरहथनी अनन्त बाबूक हाथे हमरा मारि खिअइलथि। तहिआ सँ पहिने अइ पीनपर कहुनो नइ बजरल रहए;

एकरा तेसरे साँझ दादी मुँह बाबि देलक!

हमरा आदर मे पहिने तेहरीक रेवाज नहि रहइ। शहर मे अंगरेज राज करए, देहात में जमिंदार। जनम सँ लऽ कऽ सराध धरि डेग-डेग पर बाभनक खूति चलइ, बात-बात मे पतिआ लिखबक पड़इ। एनहित सभ छोटका जातिक लोकसँ अछनक्क खंड अछूतथीन तहिआ।

चलाबलि बड़का मालिकक बेटा ओरे पटना रहइ छल। दूनू गोटे बनारी रही : कोलेज बन होइ छुट्टीमे, ओ अबथीहिन तऽ ईहो आबए। कमीज निकर पेन्हए, पकी बोली बाजए कखन कखन। चलबलिआक ई बगए-बाइन हमरा बेस बढ़िआ बूझि पड़ए। सेहन्ता हुअए जे पटना देखितिअइ कनी।

आब हमरो सतरह बरखक भऽ गेल रहए। चरबाहि नहि सोहाए किछुओ भरि।

माए आ रेबनी कहुना जपन निमहए। खुद्दी-गुड़ा, मडुआ, कोदो, साग-पात...कहुना जपन खेपने जाए। धान कूटइन, चूड़ा कूटइन, चिक्कस पीस दइन, घर-आँगन बहाड़ि-नीपि दइन, पेडिआसँ सथोदा-बारी आनि दइन। अइँठ-कूठ उठबइन, बरतन बासन मँजइन, पानि भरइन। कखन कखन जाँति पीचि दइन। अइ सब काज काल रेबनिओ कें संग कऽ लइ।

२

गिरहथनीक भातिज पटनामे पढ़इ छलथीन। होटलमे खाइत हुनकर पेट खराब भऽ गेल रहइन। एगो आदमी के खगता रहइन हुनका। अइ लए कोनो पकड़ोस, कोनो नलाक सोलकन्ह केर जरूरति नहि। आर, ओहेन आदमी बेसी बेसी दिन रहबो तऽ नहिए करितइन।

हमर अवस्थे नान्हि टा रहए, देहक साँचा नइ छोट रहए। सुनल अछि जे बाप-पितामह हमर कइ हाथक लहासवाला छल। माए पिड़सिआम तऽ रहए मुदा शुद्धि नइ छलि।

मलिकाइनिक भातिज दसमीक तातीलमे आएल रहथीन। पाँच-सात दिना छलखीन। पइघ पइघ आँखि, ठाढ़ नाक, चाकर कपार—बेस खाप-सूरत रहथिन। सोभाबक मधुर, गप-सप काल कनेमने फनकाह।

पहर दिन उठइ तऽ हम घास छीलि कऽ घूरी। तखन ओ हमरा हवेलीक भीतर बजा लइथ। नहेबा सँ पहिने मालिस ओ हमरे सँ करबइथ। देह बेस गुदगर रहइन। रोआँ सेहो हुलकी छलइन। चिकनइ लगा कऽ हम हुनक गत्तर गत्तर दूहि दिअइन। चानि पर कड़ूक तेल नइ, कोनदन लाल तेल लगबइथ। केसरनजन की भिंगिराज, भने कोदन नाम रहइ तेलक। हमरा मालिस-तालिस तऽ करए आबए साढ़े बाइस, तइन चिकनक सानल

लोढ़्या के जेना मोदिआइन बुझिअबइ छइ तहिना बुझिअबइत रहिअइन बड़ी कालधरि। कहइथ जे बड़ बढ़िआ लगइअए रओ!

एक दिन मालिस केलाक बाद पुछलइथ जे पटना रहबेँ हमरा संगे? सहरमे मोन लगतउ?

मालिकबला फटलाहा गनजी रहए देह मे, मारते छेदे रहइ ओइ मे। पेटक सोझाँ एगो छेद मे अङुरीघुसिअउने हम मारी छगुनता मे पड़ि गेलौं। की कहिअउन की ने कहिअउन, हम की जानऽ गेलिअइ जे एहेन बात क पूछि देता।

तइओ कहलिअइन—मलिकाइन के पुछिअउ सरकार हमरा पूछि कऽ की होत?

अइपर ओ कहलइथ जे तोहर माए कँ राजी भऽ जाउ तऽ पीसी के अपन हम बुझा देबइन।

बुझलहक हओ माइ, भेबो सेह केलइ! माए हमर चट बनी तइआर भऽ गेलइन। गिरहथनी के सेहो मोन पड़लइन।

मलिकाइन अपनाभतीजा के फूल बाबू कहथीहिन। सभ हुनका सेहे कहइन। हमहू फूल बाबू—फूल बाबू कहइ लगलिअइन। छुहिआ दाँत तनी तनी गो बड़ दीब लगइन। बजथीनतऽ लगइ जे फुलडाली सँ सिंगरहारक फूल खसल जाइ छइ।

फूल बाबू अपना पीसीक ओइजा साल मे दू-एक खेप अबस्से अबइथ। हमरा माइके हुनक सील-सुभाव गमल रहइक। ओ चंगेरा तऽ कऽ कइएक बेर हुनका ओइ ठाँ जाइन अबइन। नहिरा सँ भार-दोर अबइन तऽ गिरहथनिओ चंगेरा-डगेरा पठबिते रहथीहिन।

जतरा दिन लिलकन्ठ देखि कँ फूल बाबू अपना गाम गेला। एमहर

गिरहथनी के चरबाहक फिकिर भेलइन। ओना कहथीन तऽ बहे जेमर, चरबाहोक कोनो घटी? एकटा जेतइ तऽ एगारहटा आउत! मुदा कहबा मे की लगइ छइ? मनुख मनुक्खे थीक। हाथ-गोड़, नाक-कान आँखि-मुँह सब जानवर के रहइ छइ मुदा दिमागि मनुक्खे टा के होइ छइ। भैंसी चराबह की गाए, बकरी चराबह की भेँड़ी, अकिल तऽ चाहबे करी कनीमनी। अहिना भऽ जइतइ ई काज तऽ बड़दे ने बड़दक चरबाह होइतइ। खरबूज-खीराक खेतमे लोक खुट्टा गाड़ि दइ छइ। खपड़ी मे चूनक चेन्ह सँ आँखि-नाक-मुँह बना कए तकरा अडन्ह दइ छइ ओइ खुट्टीपर। दू मुट्ठी सुक्खल घास लऽ कऽ हाथ-गोड़ बना दइ छइ। मुदा ओइ नकली रखबार के कोइ पुछितो छइ? मनुक्खक बच्चा ढेप-चेप नइ थिकइ जे जखहि मोन भेल तखहि सँ उठा आनल।

से, मलिकाइन के मोस्किल भऽ गेलइन। चरबाह भेटबे ने करइन। दिन दसेक बदरुआ खोतन, तइन जा कऽ एगो बूढ़-बहीर दुसाध चरबाह भऽ कऽ एलइन। हमरा भैंसी छोड़इत बड़ अफसोच भेल। मुदा अपन साध तऽ किछु रहए नहि। तइओ बुढ़बाकेँ सबटा बात बुझा सुझा देलिअइ। दू राति संग रहि कऽ भैंसी सँ चिन्हारए करा देलिअइ।

पखेब आर दुराहुरी एको दिन होइ छइ। तकरा बिहाने हम फूल बाबूक ओइ अग जाइले बिदा भेलउँ। गिरहथनी खोतन के संग कऽ देलइथ। माए दू दिन पहिने सँ नोर बहबइ छलि। आंगन सँ बाहर भऽ कऽ गोड़ लगलिअइ तऽ डौहि पाड़ि के कानऽ लागलि। हमरो कोढ़ फाटल तऽ नोर कापऽ लागल, आँखि नोरा गेल। मुंह सँ एको आखर बोल नहि फुटल। मूड़ी गोतने अपन पेड़िआ धेलउँ।

बाप तऽ हमरा लेखे कहिओ भेबे ने कएल। जा धरि जीला ता कहिओ कलकत्ता, कहिओ ढाका, कहिओ जलपाइगोड़ी तऽ कहिओ देनाजपुर।

कपार, नाक, मोंछ आर कान, ओकर एतबे हमरा मोन अछि। माथा बड़की गो रहइ। दादी तहूजे दादिए छलि। ओकरे कोरा मे ई देह पोसल पालल गेल। माए टहिआ कहथो करइ जे रेघनी ओकर थिकइ आर हम छिकिअइ बुढ़िआकेर।

मधबन्नी सँ तमोड़िआ गाड़ीपर गेलिअइ। छीतन के देखल सुनल रहइन। मुन्हारि मोंफ सन हमरा आउर फूल बाबू ओइजग पहुँचइत गेली !

ई फूल बाबू गिरहथनी के अप्पन भातिज नइ रहथीन, वइमातरे भाइक लड़िका रहथिन। मलिकाइनक बापके तीन गो बिआह। पहिल बिआह दीस कोनो बेटा बेटी नइ, दोसर बिआह दिस फूल बाबूक बाप, तेसर दिस गुनमन्ती देवी अवतार लेने छलखीन। एहे हमरा आउर के गिरहथनी छलथि। जथा-जाल सम्पटा फूले बाबूक बाप कें भाग मे पड़लइन। मलिकाइन कें बापक धन मे सँ दसे बिगहा जमीन दरि लगलइन। बाभन-छत्री आउर के ओइजग बेटा अछइत बापक धन मे बेटीक कोनो दखल नइ। जे मेटतइ से हथ उठाइएमेटतइ। बेटी जा कुमारि रहलइ, ता खेलकइ-पिलकइ, सभ सिकारकेलकइ। अइ सँ बाढ़ि किछु नइ

तइओ भाइ-बहीन मे कुभाव नइ रहइन। फूलबाबूक माए त ननदिक लेल जान देथहिन, एहन भाउजि नइ देखल।

छीतन धूरि कऽ गाम चल गेला।

तीन चारि बिट्ठुका बाद छठि-परमेसरीक परसाद मुँह मे दऽ कऽ हमरो आउर पटनाक जतरा कएल। गामक नाम रहइ लखनउली। लखनउलीसँ तमोड़िआ तीन कोस हसर, कने पुआहुत बएलगाड़ी पर अबइत गेलिअइ। बसु-जात तसे बेसी नइ रहइन। एगो सुटकेस, बिस्तरबला होल्डाल, छोटकी टीन मे घी......ई सब तऽ रहबे करइन। एकरा अलावे पथिआ मे चूड़ा, ठकुआ, खजूर-टिकिआ भरल रहइन। केराक पत्ता मे लपेटल अचारक

फाड़ा सेहो ओहि पथिआ मे। एकटा डाली ऊपरसँ दऽ कऽ पथिआ साबेक लउड़ सँ नीक जकाँ बान्हल रहइ। बन्हलो छनलो रहइ तइओ पथिआ मइमइ करइ।

टिकट-तिकट मालिक अपनइ कटबलखीहिन। कनी काल थभिकऽ भपटिआही दिससँ गाड़ी एलइ। मेला-ठेला नइ रहइ तते। बइलमानो रहबे करेन। छागि-निछिकऽ मोटा-चोटा चढ़ा लइत गेले।

गाड़ी फुगलइ। तमुड़िआ तहन फंफारपुर, तखनी मनीगाछी, तकरा बाद सकुरि। सकुरि मे मेल खेलकइ गाड़ी। दोसर जाइत रहइ पंडौल दिस, तारसराए सँ आएल छलइ। दूनू गाड़ीक ऐंजन पानि से हो सकुरिए मे पिलकइ। फूलबाबू उतरिक ककरा ककरा सँ ता गप करइ छलइथ।

ऐंजन पुकी देलकइ तऽ मालिक गाड़ी पर चढ़ि गेला।

सकुरी आर दरिभङ्गाक बीच मे एके गो टीसन पड़लइ तारसराए।

दरिभङ्गा जकसन के हड़ाही कहइ छइ लोक। अइठाम बड़ी काल गाड़ी ठरा रहलइ। हम तावेमे उतरि के लघी कऽ एली। मालिक लाटफारम पर टहलइत घुमैत रहलैथ।

पहिले पहिल हड़ाही टीसन हम देखलिअइ। एते लेन, एते रेलगाड़ी, एते ऐंजन पहिने कहाँ से हम देखबै। आधा बाँहिक कारी कुर्ता पहिरने कुली आउर। खाकी रङक कोट पेन्ट पहिरने टी-टी-ई। मोसाफिर सभ सेहो किसिम किसिम के कपड़ा पेन्हने।

हड़ाही जकसन मे दू टा लाटफारम छइ। अइ पार सँ ओइ पार जाइलए बड़की गो पुल टे छइ।

ठाढ़े ठाढ़े लोक कें इबर-इधर सोहारी-तरकारी गिड़ैत देखलिअइ तऽ बड़ अजगुत लागल। मेल जे खोचोरी, बरहि के किए ने खाइए ! बोली से

कए तरहक सुनिअइ।

एक गोटे फर्दी छपलाहा कागज बेचैत रहइ। बाबू ओकरा सँ ऊ कागत किनलइथ। पाछाँ बुझलिअइ जे लोक ओकरा एखबार कहइ छइ। ओइमे दुनिआ-जहान के खबरि छपल रहइ छइ।

एंजन पुकी देलकइ आर सुसुआए लगलइ त फूलबाबू गाड़ीपर चढ़ला। लगेमे आबि कें बइसला। अइठाँ सँ गाड़ी खूब रेस कऽ देलकइ। नीचाँ पहिआ हड़ाक हड़ाक करइ। कील आ थूरी सब हीलइ त डिब्बा आउर डब्बर डब्बर बाजइ। ऐंजन भक्भक् काली कक्कक् काली करइ। भीड़े मे एक गोटाके पुछलिअइ—गाड़ी एना किए बजइ छइ?

ओ कहलक—पहिले पहिल गाड़ी चलबए लागल त अङरेज बहादुर कें भारी मोस्किल भेलइ। काली माइ टकसइ ने देथीन। छोटा लाट सपना देखलक जे सए जोड़ा करिआ छागर कालीजीक चाहिएन। तइन ऊ कलकत्ता मे टिलिगराम कए देलकइ। एकबेर सए जोड़ी करिआ छागरके सोनित पिलथीन से काली माइक जीह चारि आङुर छोट भए गेलइन। तहिए सए ऐंजन काली माइक जे-जे कार करइत चलइ हइ भक्कऽकाली भक्कऽकाली झक्कऽकाली……सुनइ छहक? साफे त कहइ छइ!

ई बात सुनि कऽ गुम भऽ गेल रही। आब कोइ ई बात कहत त पतिएबइ, मुदा ओहि दिन तऽ सोलह आना साँच बुझि पड़ल।

गाड़ीमे देह लेना ने हीलऽ लागल जे की कहिअइ, हुऐ जे गिरइथक कलममे मचकी झूलइ छी! कनी काल बादे आँखि झपा गेल।

धक्का सँ निन्न टूटल तऽ गाड़ी समस्तीपुर आबि गेल रहइ। ई जकसन तऽ दरिमङ्गो सँ पड़ब।

अइ ठाँ हमराआउरके गाड़ी बदलेके रहए।

हमर बिचार नइ रहए, मुदा फूलबाबू जिद्द धेलइथ जे एगो कुली कइए ले।

कुली बोझा उठबलक। थी बला टीन हम लेली। पूल परसे ओइ पार भेलिअइ।

लाटफारम पर मारेँ लोक। किसिम-किसिमके चेहरा-मोहरा। किसिम-किसिमके पहिरन-ओढ़न! बोली बानी मिझड़ाएल।

मोटा चोटा बाकस-बिस्तरा नीचाँ धेलक कुलीवा। गाड़ीमे बिलम रहइ। कुली अपन चल गेल। मालिक कहलइथ—चूड़ा ठकुआ बाहर कऽकऽ खाऽ ले।

अही ठाम?—हम कहलिअइन।

मालिक कहलइथ—तऽ, की हेतइ? देखइ नइ छहो, कते गोटे तऽ खाइ छइ!

ठकुआ दुइए टा लेलथीन मालिक, एगो अुसवा। खोंटि कऽ अचार। इनारा सँ बूका देलइथ तऽ कल सँ पानि आनि देलिअइन। टोंटी जोर सँ दबउने रहिअइ से छातीपर-कपारपर पानि पड़ल रहए, हबर-हबर पोछि नेने रहिअइ तइओ सुखल तऽ नहिए छले।

गोछ पातेक कुक्कुर आर तिन-चारि गो कल्लर छओंड़ा फूलबाबूके घेरने ठाढ़। धड़ तामस उठल। हाथ उसाहलीअइ तऽ ऊहे मना केलैथ। कुक्कुर आउर तऽ जे से मुदा कलरवा सब के अनधैर्य भेल जाइ, बीच बीच मे ऊ आउर बाजे—"बाप रबो बाप, सबटा खेने जाइ छथीन मालिक……हमरा आउर ले नइ रह देबइ, सरकार!……" एखबा कहइ आर कनबाक भगल करइ।

एहनामे कहउ खाए-पीअल जाइ!

नइ खाएल गेलैन तऽ मालिक पत्ता छोड़ि कऽ उठि गेलैथ।

कलरबा सब अपनामे छुछुरे माही कटाउज करऽ लागल।

हाथ धो कऽ एलैथ तऽ कहलैथ जे तों गाड़िए पर खइहें।

कतीकाल पर कटिहारवाली ट्रेन एलइ तऽ कुलिओ दउगइत आएल। रेल बेस खुलइ, मुदा हमरा आउरके जगह भेट गेल।

ई गाड़ी अमीनगामसँ आएल रहइ, जाइ छलइ इलाहाबाद। पूरब भरसँ मुलकी कमतिया सब अबइत रहए, छपरा-बलिया दिस अपना अपना घर जाइत रहए। दु गोटे एहनो रहए जकर बोली नइ बुझिअइ। पुछलापर फूलबाबू कहलइथ—ई बंगाली थीक, बङ्गला भाखामे बजइ छाइअए। तते हबर-हबर बजै जे किछु नइ बुझयै।

चूड़ा फँकली, ठकुआ खेली। पानि पेने रही लोटामे, से पीबि लेली। तइन जे बइठले मे आँखि मुनलिअइ से हाजीपुरके बाद निन्न टूटल। हाजीपुर आर सोनपुरक बीचो बीच बड़की टा पुल छइ। गण्डकीके अइ पुलपर गाड़ी एलइ तऽ तती जोर सँ हड़हड़ाए लगलइ जे की कहिअ।

फूलबाबू हमरा कहलइन—देखही, दक्खिन भर ओम्हर बारह पारमे इजोत के देखइ छहिन सएह पटना थिकइ।

आरौ तोरी! हमरा मुंह सँ बहराएल।

बाबू कहलइथ—मुदा गाड़ी तऽ घूरि कऽ जेतइ। एखन चारि घण्टा लगतइ!

एतनी दूर जाइमे चारि घण्टा?

तऽ, देखइत ने रहिन!

तावेइ मे सोनपुर आबि गेलइ। गाड़ी ठाढ़ भेलइ।

फेनू कुली केलखीन मालिक।

घटही गाड़ी लगले रहइ। कुलीया ओइपर गाऽ कऽ बइसा देलक। राति पहरभरि छल होतइ। गाड़ी चललइ तऽ ढकर ढकर बजइ।

पहलेजा पहुँचइत पहुँचइत किरिन फुटि गेलइ। सामने ओइ पार महेन्द्र घाट।

सउँसे गाड़ी खलास भऽ गेलइ। जहाजदिस धरोहि लागल। बुझि पड़इ जेना बीहरि सँ बहार भऽ कऽ लोक आगू मुहेँ ससरल जाइए। बकसा-बिस्तरा माथपर बोझने कुली आउर पसिजरके धकिअबइत चलइ। हमरा तऽ अकबक किछु फुरबे ने करए।

जहाज पर चढ़लहुँ। फूलबाबू बिस्तराबला मोटापर बइठलइथ। लोहक बड़की गो नाओ, तइपर काठक कोठा। इहे तऽ भेल जहाज। जहाजक बीचो बीच चाकर-चउकोर खाधि मे सातोँ मसीन, सातोँ कल-पुर्जा। लोहक तार आर जालीसँ घेरल रहइ। फूल बाबू कहलइथ—जहाजक ऐन्जन थिकइ।

ओ तऽ जा कऽ बैसि रहला मुदा हम बड़ी कालधरि जहाजक ऐन्जन देखैत रहलहुँ। एह, धन्न कही मनुक्खक मगजके! सोचइत-पोचइत बिचारइत-बिचारइत कलमे कल भिरबइत गेल, पेच पर पेच कसइत गेल··· पथरकोइलाक आँच पानि गरमाइ छइ, ताहीसँ भाफ तइआर होइ छइ। भाफेक जोरे जहाज आर रेल आर कल-करखाना चलइए।

जहाज पर बइसबाक बेंच-कुरसी नहि रहइ। थड़ किलास मे माल जाल जकाँ जकरा जेना मोन होइ से तहिना कठए-बइठए। एखबारबला बुलि-बुलि एखबार बेचए। चिनिआ बदाम बला सेहो अपन सओदा बेचए।

ऐन्जनगंहक मोट-पातर टोंटी आउर खूब धुधुआइ। बहार मे जहाजक दूनू कात बड़का बड़का पंखदार पहिया घुमइत रहइ आर जहाज छरर-छरर

सरर-सरर पानि कटइत गंगा मइयाक छाती पर आगू बढ़ल जाइ।

महेनरू घाटक जेटीसँ दू हाथ फराके जहाज ठरा गेलइ। कुली सब धमाधम कऽ मोसाफिरक गेलामे पहुँचल। उतरे खातीर लोक सेहो काते काते तइआर। जहाज एकभगाह भऽ गेलइ। हमरा डर भेल जे उलटि ने जाइ!

फूल बाबू फेनू एगो कुली केलइथ।

तीस-चालीस सीढ़ी टपि कऽ ऊपर महेनरूघाटक टीलन रहइ। तबरा उम्हर टमटम आ रिकसा ठाढ़। तहिआ साइकिल रिकसा नइ, हाथ रिकसा रहइ। आब ओ रिकसा उठि गेल छइ। ओइमे दुइए गो चक्का रहइ आर आदमी दूनू हाथें दूनू डंटाक छोर धऽ कऽ ओकरा घीचइ।

मालिक एगो रिकसावालाकें ठीक केलइथ।

मछुआटोलीक भीतर एगो छोटकिनसी गली रहइ, तहीमे डेरा रहइन। रिकसा बासाधरि आबि गेलइ।

डेरा ई फूलबाबूक असालतन रहैन। कहऊँ रहौथ, मुदा बासा ई बरोबरि रखइथ।

मकान छलइ बनिआकेर। आधा मे अपने रहए ओ। आधा लगओने छल भाड़ा पर। बीच आङनमे इनार रहइर सं छहरदेवाली। आधा इनार ओम्हर पड़इ, आधा इम्हर। दूनू दिसुका डोल व ए दिन कुइनामे खड़ि जाइ।

भाड़ा रहइ दस रुपइआ महीना। दू टा कोठली, भनसा, पएखाना। कनी टा अङनइ, दू चपकी जोकर ओसारा। पुरान केबाड़ीबाला दुआरि। ऊपर खपरा। कोठलीक फरस ठऽ पक्की, मुदा आङन कचिआ।

बर्तन-बासन सभ टा रहबे करइन। महीना भरिके चाउर-दालि-नोन-तेल मसाला आबि गेलइ। दू मोन जारनि। एक डाकी चिपड़ी।

मानस करऽ अबइत रहए हमरा। कनी मनी जे माछठ छल से फूलबाबू अपनहि सिखा देलइथ। पथरकोइलाक आँच पर रान्हल दालि-भात हुनका बहि सोहाइ छलइन। सोहारिओ नहिए खाथिन। पनपिआइ मे चारिटा बिसकुट आर गिलास भरि गरम दूध। कहिओ कहिओ हलुआ से बनबाबइथ।

दोसरे दिन मालिक हमरा निकर आर हाफ कमीज सिआ देलइथ। केस छँटबा देलइथ नउआ सँ '''ललकी साबुन के टुकड़ी सँ माथ मलि-मलि नहेलिअइ। नइ ने मानलइथ! कहलइथ—ई पटना थिकइ, गाम नइ

थिकइ। माथा के बगड़ झोंक बनओने रहबे तऽ लोक बनहुस्सुक बुझतउ! सहरमे रहबाक छउ तऽ आदमी बनि कऽ रह!

मालिकक नजरि बचाकऽ एना मे ओइ दिन हम अपन मुँह देखल तऽ हमरा रसलोलीना मोन पड़ल—एह ओ हमरा उन सुन्दर कहाँ सँ आएल?··· कनी गामक लोक बालचन केर ई सकल देखितइ!···

दू-चारि दिन धरि माए आ बहीन बड़ मोन पड़ए, तकरा बाद पहिनेसँ कम होमऽ लागल।

नव देस, नव मुलुक। नव चेहरा, नव बोली-बानी। नव देहबार, नव रहइत। लागए जे कोनो दोसरे संसार में आबि गेल छी। मधुरी काकाक मुहें सहरक कतेको गप सुनने रहिअइ मुदा ई अन्दाज कहाँ रहए? सहरक ई साँचा तऽ सपनोमे हमर मोन नइ देखने रहए कहिओ!

सुनने रहिअइ, सहरमे पहुँच रहितहि आदमीक मोन बदलि जाइ छइ। अपना घर-परिवार बिसरि जाइ छइ ओकरा। मुदा हमरा तऽ बीच बीच मे अपन घर आङन बेस मोन पड़ए। माए मोन पड़ए, मोन पड़ए रेवनी। चितकबरी बकरी मोन पड़ए। बाड़ी महक दुइ जिम्मड़, ओकरा कान्हपर ललरल घेरा, एकचारी पर लतरल कोंहड़ाक लत्ती, लोढ़िआ मिरचाइ केर बुढ़वा गाछ कोखन कोखन आङन मे हुलकी देनिहारि दिदी···एकएक कऽ सब मोन पड़ए। आर जोर-जोर सँ हम साँस घीचे लागी। खन बुढ़िया पोखरिपर सुरता जाए खन डोंड़के चउरी पर—अइ चउरी मे हमरा आउर केसउर उपाड़ी मे···अपना गामक बाध बोन मोन पड़ए; कलमी मइ बुढ़वा किसुनभोग पर मर्कट माइहैं खातिर मचान कऽ ढेलवाती खेलाइ से गाछ मोन पड़ए। सोगहा, चुनिआ, मुट्ठा, नरेना, कुंजा, सुहरा, मकराहा सन बतारी इत्यादि आबए···

अइ सब सँ मोन भरिआए तऽ लहरटोली बला सड़कक कातमे कनी काल ठाढ़ होइ। अबइत जाइत लोक कें देखिअइ। बाइसिकिल, मोटर आर टमटम आर टुन टुन बजइत हथ-रिक्सा। ई सब देखिअइ तऽ गामक सुरता नइ रहए।

काज बेसी नहि रहइ छल। बर्तन रातिए कऽ माँजि राखी। चौका सेहो रखैत कएल रहए। भोरे उठि कऽ चुल्हीमे आगि धरा दिअइ। दूध दऽ जाइ से अउँटि ली। तहन अदहन चढ़ा दिअइ। एक कात भातक आर एक कात दालिक। भरि सनी तरकारी लऽ आबी बजार सँ। न बजइत बजइत भानस तइआर। साढ़े न धरि मालिक खा लइथ। दालि-भात-तरकारी चटनी, घी पापड़-अचार। दही दिन कऽ, राति कऽ दूध। दस बजे धरि ओ कओलेज चलि जाइथ। हमहूँ नहाइ-सोनाइ, खाइ-पीबी, चउका बरतन करी। नीक जकाँ दोबारा झाड़ि बहाड़ि दिअइ कोठरी आउरके। बारह बजइत बजइत फुरसति भऽ जाए।

बारह सँ ले के तीन बजे धरि बेस टहलान मारी। कहिओ कहिओ गोलघर दिस, कहिओ सिकरिटिरिएट, कहिओ जादूघर, कहिओ टीसन, कहिओ अस्पताल दिस। कओलेज दिस कहिओ नहि जाइ। मालिकक लाज हुए। मना तऽ नइ केने छलइथ, तइओ टहलइत-बुलइत काल ओ कहुँ देखि लइथ तँ लाजे कठुआ जाइ।

जहिआ नइ बहराइ तहिआ मकानक मलिकाइन-जोरे गप्प लड़ाबी। ओकर घरबला भोरे जे दोकान जाइ से निसोहँड राति कऽ अबइ। ई मलगी हमरा मालिको सँ हँसी ठट्ठा करइन आर हमरो सँ करए। मालिको के पान खिआबइन आर हमरो खुआबए। दू टा बच्चा भऽ कऽ मरि गेल रहइ, बाद मे किछु भेबे ने केलइ। घर-आङनक ओगरबाहि लए बुढ़िया

मउसी कें रखने रहए। ओकरा मोने तइयो हम ओकरा सोंगी महसूस रहितिअइ। मकानवाली के ओ बेमारी नहि छलइ जे बेमारी खवसिनिआ के रहइ। नापकड़ि पइर ई अवस्ले रहए। गप्प केनिहार केओ नहि भेटइ त हमरे सँ संतोख करए।

मालिक दू गो पइसा हमरा रोज दइथ। ई पइसा हम जमा केने जाइ। कथि मे खर्च करितउँ ? तर-तरकारी आर दोसर चीज-बउस आनऽ काल एगो-आध-गो पाइ बचिए जाइ, बीड़ीक खर्चा ओही मे चलि जाए।

पान खाइत बड़की एना मे कइएक बेर अपन मुँह देखी। सबकक कलबाहि मे जतहि पानक दोकान ततहि एना लाइ। जहाँ एना देखाइ पड़ए की हम ठमकि रही। कोनो ने कोनो लाथे ओहि अपन जसेरे देखिली एना मे।

चारि बजइ की फेनू सुरहाक आरती करऽ बैसी।

मालिक कहिओ कहिओ हलुआ अपनहुँ बनाबइथ। एक दिन बनबिते काल अण्डा फोड़िकें फीअरका रस ओइमे ढारि देलखीन से हमरा बड़ कोनादन लागल। मालिक कहलइथ—गाम पर नहि बजिहइन।

से किऐ ?

फूलबाबू कहलइथ जे मुर्गीक अण्डा अपना ओमहर बाभन नइ खाइऐ मुदा फाएदा बड़ करइ छइ। अङरेजी पढ़निहार इसकूलक छहरदेवाली छरपि क कालेजक अङनइ मे पाएर रखितहि अइ सबकथुक चर्चा बर्चा सुनइ लगइ छइ। तकरा बाद केओ-केओ हमरे जकाँ दोगादागी चढ़बऽ लगइऐ ......देखितहि छैँ.........।

सुभाव बेजाए नइ बूझि पड़ए। ओना हम हुनकर टहलुआ रहिअइन; मुदा एलगऽआक अनमना रोहो छलिअइन। हिन्दी अङरेजी बजइत मुँह दुखाए लगैन तऽ हमरासँ अपना भाखा मे बाजइथ। कहइथ—अही लेल

तऽ तोरा अनलिऐ, टहल-टिकोरा लेल तऽ अहूडाम आदमी भेटिए जइतए। तोरा सङ्गे गप करइत रहइ छी तऽ बुझी पड़इए जे गामहि छी......।

बाप किरपिन रहथीन। माय लाहखर्च। बापक दिस सँ खर्चा हिसाबे सँ भेटइन मुदा माए लुकाकऽ खूब देथीन। दुइए चारि दिन हम हुनकर गाम पर छल रहइन, थेती तऽ थाह-पता नइ लागल, मुदा एतबा बूझऽ मे आबि गेल जे लगानी-भिड़ानीक बड़ जोर छइन। जर-लथार मे दुसाध, मुसहर, चमार, खतबे, डुनिआ, डुगरा आउरके छोट-छोट टोल रहइ। सन-बनिहार आइओ कालिह पेट बेचने घुरइए, ताहू दिन पेट बेचने घुरए। भूखक लेल अतरी अँइठऽ लागइ तऽ बाइ मइआ सँ चारि पसेरी अन्न था की दुगो रुपइआ मडैन गऽ। काज तऽ चला देथीन, मुदा पाछाँ आस्ते-आस्ते लोहू घीच लेथीन आर चमड़ी चिबाकऽ सिट्ठी बना देथीन। चुमनू बाबू—जइसन नाम तइसन काम! फूलबाबूक बाबा कनइली राजक तसिलदार छथीन। भागलपुर सँ दक्खिन, बाँकादिस चाकरी करइत जिनगी गुदस्त भेल रहइन। कमाकऽ टाल लगा देने रहथीन। चुमनू बाबू दूर-दराजक पलें जमीन जाल खूब बढ़ा लेने रहइथ। धनीक खाहे हिन्दू रहओ, खाहे मीआ, खाहे अङरेज रहओ, खाहे जपानी- सब एके जातिक होइए। गरिबहोके हमरा जनइत एक्के गो जाति होइ छइ। चुमनू बाबूक भितरिया मारिसँ राड़े टा नहि, बाभनो कइएक घर तबाह भऽ गेल रहए। बेटा के पढ़बइ छलइथ जे जज मजिस्टर देथीन।

मुदा अपने इच्छे तऽ सब किछु होइ नहि छलइ। बापक जे मोन रहइन ताही मोताबिक फूलबाबू तइआर होइतथीन तखन की छलइन ?

फूलबाबू भितरे भितरे कङरेसिआ भेल जाइथ छलइथ खूब एखबार पढ़इथ। लीडर आउर के लेकचर खूब सुनइथ। बरका बरका लीडर

गिलिफदार हुए आर माला पेन्हि पेन्हि के जहल [illegible] । मालिक महात्माजेर इहे हुकुम चलइन ! बाकी-पुरुखा बड़की मैदानमे कहियो कहियो भारी मिटिन होइ । फूलबाबू बरोबरि मिटिनमे जाथि । एक आध बेर हमहूं देखऽ गेल होएब । बात किछु नइ बुझिअइ, ओते राल लोक कें अभा देखिकऽ अजगुत लागए ।

कोट-कमीच छोड़िकऽ मालिक खद्दरक कुर्ता पेन्हऽ लगलथीन । धोती, तहमी, अङपोछा, चद्दरि, गेरुआक झोरा......सब खद्दर । ओहन-महीन जे डेरापर भेंट करै अबथ न ताहूमे आब तेहने लोकके बेसी देखिअइ ।

खेना-पीनाक सेहो ढंग बदलि गेलइन । माछ-मांस आर अण्डा छोड़ि देलैथ । हमरा मालिकक ई स्वभाव देखि के दुख हुए । किछु कहइअइन से हिम्मति नहि । ओहि झोक मे फगुआ बितबलइथ ।

कइलक फगुआ आर चइतदनी । मालिक बेर ठोर फाटि गेलइन । ई देखि कें हमरा कोइ फायदा । इनका तऽ बाबक चिट्ठी बराबरि अबइन, मुदा हमरा नहि आबए माइकेर हालसमचार । गामक लोक ओना तऽ जे दुइओ पतिआनी लिखऽ, अइन कोनो राजा-देव हेतइ तइसने मोन पाड़त ।

चारि मासक दरमहा पठा देने छलिअइ, आठ गो रुपइआ । चालीस दिनके बाद तकर रसीद ऐल । ओंठा-निसान हमर माइएके रहइ बूझऽ ओहपर, गवाही मे के दसखत केने रहइ से नइ बूझलिये !

चैतमे दू राति मालिक बासा पर नइ एलइथ ।

पुछला पर कहला—दीघामे सदाकत आसरम छइ ओतहि रहि गेलिअइ । हीत-मीत लोकनि नहि मानलइन ।

बड़का कबलेज सब मे पढ़ाइ कम होइ छइ, छुट्टी बेसी । बरख भरिमे पांचो मास फूलल रहइ छइ की नहि, से कहनाइ मोसकिल । फूलबाबू

अपन दुनू काज सम्हारइथ—पढ़बो करइथ आर कङरेसो करइथ ।

गरमीक छुट्टी हेबाला रहइ । चारिए छ दिन बांकी छल हेतइ । मालिक भोरे सदाकत आसरम गेलइथ कहले रहइथ—साँझुक पहर घुरबइ, एखन हमरालेल भानस जुनि करिहेंए ।

खिचड़ि आर आलुक सान्ना बनइलहुँ अपना लए । खेलहुँ आर टहलि बुलि कऽ बेर बितबलहुँ ।

साँझखन सकाले चुल्हा धरा देलिअइ । बड़ मोनसँ मुनिगा आलुक तरकारी कैली, टमाटरके मिठका चटनी बनौली । हीङसं दालि छौंकली । तीन अधिआन खिआकऽ दूध औंटली, अचार नइ रहइ, त मकानवाली सं निमकी अनली ।

आहि रे बा ! बारह ठोकलकइ मुदा फूल बाबू कहाँ एलइथ । घुरि घुरि कऽ हम सड़कक कात मे आबि ठाढ़ होइ । पच्छिमसँ जे कोनो रिकसा अबइ तकरा गहिकी नजरिसँ देखी, बड़ अनदेसा हुऐ । हुऐ जे की भेलइन मालिक के !

बाट तकइत तकइत झिमा टहकऽ लागल तऽ कोठरी मे आबि कऽ पड़ि रहलहुँ । के खाइए के पिअइए !

कखन कोना पदनी सुना गेल आ नाक बाज लागल से नइ बुझलिअइ !

भोर मे महेन बाबू आबि कहलइथ—"मालिक त तोहर गिलफदार भऽ गेलथुन, माला पहिरि कऽ जहल गेल छथुन । एसगर कथीलए बासा ओगरबें चल, ता बऽ हमरा ओतऽ रह गऽ । चीज-बउस अपन कोठरी मे बन्द रहतइन ।"

महेनबाबू एतेबात इबकेबेर बाजि गेलइथ आर कुरसी पर बइठिकऽ सिकरेट पिअ लगलइथ ।

हमरा ई सब सुनिकऽ अकबक किछ्छो नइ फुराइ ।

सोलह-सत्रह बरखक अवस्था छल हैत । महेन बाबू के हमर हालति देखि

कऽ कनोट मेल देतइन। मालिकक मिलफदारी दऽ ओ जऽ नहि कहितइथ आवि कऽ तऽ कोना बुझइतिअइ? एखनार सेवकार बन्दे भऽ गेल रहइ आर हमरा तऽ पढ़ऽ नइ आवइ, कारी अच्छर महींस रहइ हमरा लेखें। तहन असल बात नइ बुझने रहितिअइ तऽ दू-चारि दिन अबस्से अउनइतउं।

बड़ीकालधरि गुम्म रहलउं। तहन कहलिअइन—सरकार, दरिभंगा-मधुबन्नी दिस केओ गेनिहार होइ आर ओहीक जिन्हार रहए तऽ ओकरे सङ हमरा देस पठा दिअ ...अइ ठमा असगरे हम कोना रहब!

अइपर ओ हसलइथ आर बाजला— धुर बताहा! तोरा लेखें जेहने फूलबाबू तेहने महेनबाबू। हमरो आङन घरेमे रहइ छिअइ, चोन मे कहाँ रहइ छिअइ? मास दू मास मे मालिक जहल सं बहरेथे कथुन, तो अनेरे अगुताइ छऽ।

महेन बाबूक ई विचार चिरैता नाहित तीत बुझना गेल। हम सोचली जे बाबू लोकनि बड़ा मतलबी होइ छथि। हिनक नोकर-चाकर भागि गेल छेलैन तैं हमरा पर एतेक जोर दए रहल छथि, नहि तऽ मंगनी मे ककरा के अन्न-पानि देत छैक। तइयो हिनका ओहिठाम दस दिन रहि देखबाक चाही। एना एसगर गाँव जायब तऽ मलिकाइन खोदि खोदि कए सबटा हाल जानि लेतीह। ई सभ बात जखन फूल बाबूक माए-बाप सुनथिन तऽ हुनका लोकनिक मोन हरबड़ा जेतनि। मालिकक माए तऽ अन्न-पानि छोड़ि कए जान देबापर उताहु भए जयथिन्ह। ई सब ब्रह्मवध हमरे माथ पर पड़त। बाप रे! ई तऽ भऽ नहि सकैत अछि।

मोने मोन हम निश्चय कयलहुं जावत फूलबाबू जेल सँ छूटि कए नहि औताह, तावत तक हम गाम नहि जाएब। महेन बाबू ठीके कहैत छथि, जेहने महेन बाबू, तेहने फूल बाबू। बाजब-भूकब, रहनाइ सहनाइ रंग-ढंग सब एके

छैन्ह। रहनाई कठिन छल जे दुनू मे के एनैस देताह आ के बीस। तऽ बुझ-लइ ही भाई! जल्दी-जल्दी वस्तु-जात ठीक कैलहुं आ बंगला-खिड़की बढ़िया जकाँ बन्द कऽ देलियैक। अपन कपड़ा-बिछौना, सिलेट-पिनसिल निकालि कऽ बाहर राखल। मकान मे ताला ठोकि महेन बाबूक संग चलि अएलहुं।

महेन बाबू बड़ा खुशी भेलाह। घरक विषय मे बहुत बात ओ बाटे मे हमरा सँ पूछि लेने छलाह। बाप मरि गेल। दाइ (आजी) मरि गेल। माए आ छोट बहिन अछि। दू-तीन बरख तक महींसक चरौनी कैलहुं। ई सब बात महेन बाबू हमरा सं बूझि लेने छलाह।

शहरक बाहर बाँकीपुर मैदानक लग एक बड़काटा बंगली लाल रंग मे रंगल छलैक। ओ सोझे हमरा भीतर लऽ गेलाह। हमर मलिकाइनक उमिर सँ बेसी नमहर महेन बाबूक माए पीढ़ी पर बैसल तिल मे सँ कंकड़ी बिछैत रहथीन। महेनबाबू हमर कान्ह पकरि माए, के कहलथिन—माए, ई फूल-बाबूक नोकर छैन्ह। माँजी हमरा एड़ी सँ शिखा धरि देखि बजलीह—फूल बाबूके ई कि सनक असवार भऽ गेलैन? गाँधीजी नीक घरक नेना सबके बिगारबाक ठीका लए लेलेन्ह अछि कि? पढ़ब-लिखब छोड़ि कालेजक विद्यार्थी सब आब नूने बनौते कि?

एते बाजि ओ ऊपर भगवानक दिस हाथ उठा कए बजलीह—हे दीना-नाथ! आहाँ एहि नेना लोकनि कें बुद्धि दियौन।

नमहर मकान रहैक। बड़का-बड़का बारहेक कोठली छलैक। आँगन मे लताम, हरसिंगार आ नेबोक झाड़ छलैक। हम ओही झाड़ लगक दिस टुकुर-टुकुर तकैत छलहुं कि माँजी मनटिया कें सोरपारि कए कहलखिन—बाबाजी, फूलबाबूक नोकर आएल छैन्हि एकरो भानस हेतैक।

हमरा महेन बाबू लऽकऽ अपना कोठली मे अएला। अपन कोट उतारि

खुट्टी पर टाँगि देलखिन। कुर्सी पर बैसलाह आ इशारा सँ हमरो बैसए कह-लनि। हम नीचा पलस्तर पर बैस गेलहुँ। कोठली बढ़िया आ नमहर छलैक साफ सुथरा। एक पलंग, कुर्सी, टेबुल, किताब सँ भरल रैक आ कपड़ा टाँगए बला खुट्टी। पलंग पर चनवा जकाँ ऊपर टाँगल मुसहरी, पैर पोछक पापोश। ई सब बड़ बढ़ियाँ लागल।

महेन बाबू बंगाली छलाह। हमरे मालिकक संग पढ़ैत रहथि। दुनूगोटा मे बड़गाढ़ दोस्ती छलैन। मालिक के घर सँ चूड़ा, घी, अचार, सब आएल रहथिन ताहि मे सँ आधा महेन बाबूक घर पठा देने रहथिन। महेन बाबूक माए-बाप सब हमरा मालिक कें चीन्हैत छलथिन। ओ लोकनि फूलबाबू कें अपने बेटा जकाँ बुझैत छलथिन।

बंगाली लोकनिक परिवार बड़ भरलपूरल रहैत छैक। हुनका लोकनिक घर-गृहस्थी, खेनाई-पिनाई, ओढ़ब-पहिरब, सब देशवाली (बंगाल सँ पश्चिम) लोकनि सँ भिन्न। महेन बाबू आठ भाई-बहिन छलाह। एकर अतिरिक्त घर मे माए-बाप, विधवा मौसी, दू नोकर आ एक भनसिया, जकरा सब बावाजी कहि कऽ सोर पारैत छलैक। एक बड़का इस्टेट छलैक हो भाई! महेन बाबूक पिता सिकरेटरियट मे अफसर रहथिन। आठ सौ रुपैया महीना पबैत छलथिन। बारह सालक पुरान नोकरी छलैन। बंगलाक पाछू मे करीब दू बीघा खाली जमीन भेटल छलैन। आगा हरियर घासक काटल-छाँटल छोट-छिन मैदान-नीमक दू टा झूमैत झमेल जुआन गाछ। काठक छोट टा फाटक। साहेबक नाँव पट्टी पर लिखल रहैन। इसा मे छुकब सँ पहिने ओइ पट्टी पर तोहर आँखि पड़ि जैतह।

हुनका ओहिठाम चारि दिन रहिकए हमरा मोन के बड़ संतोष भेल। महेन बाबू हमरा अपन चाकर बना कए रखने छलाह। केओ विरोध नहि

केलक। नोकर के ओ मना कऽ देने छलखिन—जाइसँ हमरा कोठली मे बल-चनमा झाड़ू देत। हमर चाय आइसँ बलचनमे आइ टेबुल पर आनिकऽ राखत। हमरा धोती कें बलचनमे चुनिआवत। कहबाक तात्पर्य ई थिक जे सिनेह मे महेन बाबू हमरा सराबोर कऽ देलनि। मुदा हौ भाई सब, एतेक जखनी भला हम अपन फूलबाबू कें कोना बिसरि जैतहुँ।

फूल बाबू बड़ा मोन पड़ैत छलाह। एहगर मे कतेक बेर करेज फाटल, कतेक बेर आँखि भरि आएल—से कहि नहि सकैत छी। ताइ दिन गांधीजीक बड़ जोर छलैन। धड़-पकड़ जारी छलैक। सरकार बहादुर दिस सँ कानून छलैक जे नून लोक नहि बना सकैत अछि। गांधी महतमा सरकार कें झुकबऽ चाहैत रहथीन। अँगरेजी सरकार अपना जिद पर अड़ल छलैक। कलकत्ता बम्बईक सेठ साहूकार लोकनि सेहो भीतरे-भीतर गाँधीजीक पच्छ लैत रहइन। हुनका लोकनि कें साफ-साफ देखऽ मे अबैत छलैन जे सोराज भेला पर सबसँ अधिक नफा हुनके लोकनि कें हेतैनि। सरकारक झुकला सँ सोराज आ सोराज भेला सँ बेसी सँ बेसी कल-करखाना खोलबाक अवसर, सब हुनका लोकनि कें स्पष्ट देखाइत छलैइन। अखन जे देस के दूहि कऽ अङरेज लऽ जाइत अछि से सोराज भेला पर सब हमरे खजाना मे आबऽ लागत...सन तीस-बत्तीसक जमाना रहैक। गांधीजीक हुकुम सँ बाबू लोकनि गिरफ्तार भए रहल छलाह। हमरा फूल बाबू के सेहो गाँधी महतमाक हवा लागल रहैन। मुदा हमरा बूझऽ मे नहि अबैत छल जे कियाक लोक बेकार अपना के पकड़बैत अछि। ने मारि-पीट, ने गारि-गारि आने झगड़ा-झंझट। फेर किया पुलिस ककरो पकड़ि कऽ लऽ जाइत छैक। सरकार पागल ने तऽ भऽ गेलैया। हम एक दिन महेन बाबू सँ पुछलो कैलियनि आ उत्तर मे ओ बहुत बात कहलनि मुदा हौ भाइ हमरा बूझऽ मे किछु नहि आएल। बेर-बेर

हम इयाह सोचैत छी जे बाबू के जखन गड़ले जयबाक थलैन तखन हमरो नेने जइतथि। ई जे दस-दस, पाँच-पाँच आदमी कुर्ता, धोती, टोपी पहिर कऽ गरा मे माला पहिरने चढ़ल छली जकाँ नून बनाबऽ जाइत रहथि तऽ हमरा ई बाबू लोकनिक एकटा खेले बुझना जाए। अहुना कहियो ककरो लोराज भेटलैया।

अधिक काल तक गुम-सुम रहबाक अवसर हमरा महेन बाबूक ओतऽ कहिओ नहि भेटल। हमरा उमिरक बच्चा सँ हुनकर घर भरल रहैन अपना भाए-बहिन मे नमहर महेने बाबू छला, भाए तेसर आ चारिम बहिन उमिर मे हमरे एकेक टा रहैन, चारिटा छोट-छोट। ओ कहिओ हमरा उदास नहि रहए देलनि। बड़ा बाबू आ अम्माजी सेहो हमरा पर नजरि रखैत रहथि। पन्द्रह पन्द्रह दिन पर हजाम अबै आ बच्चा सबके केश काटि जाइ। शनि दिन कऽ धोल कपड़ाक मोटरी लऽ कऽ धोबी अबैक। भोजन मे दू एक टुकड़ी माछ नित दिन अवश्य भेटि जाए। हम नहि चाहैत रही कि चाय पीबाक लति पड़ए मुदा महेन बाबू हमरा जबरदस्ती पिअबैत छलाह।

आर हमर काजे की रहए? महेन बाबूक थोड़ बहुत सेवा टहल आ साँझ कऽ छोटका खोखा बाबू के रबरक पहिया बला छोटका गाड़ी मे घुमा लेनाई। बड़ा मौज छल। भरि पेट खेनाई आ तानि कऽ सुतनाई। हमर ओ छोटकी मलिकाइन आ एहि अम्माजीक बीच अकास-पतालक अन्तर। एतए हमरा केओ कहियो मारि नहि देलक। केओ कुत्ता सुअर नहि कहलक। केओ कान नहि अंइठलक। उनटे एतए महेन बाबूक छोटकी बहिन सब तगर आ कनेरक झुमका सँ हमरा कानक साज सिंगार करए। एक बेर कहिल, कहबहक तऽ नइ ककरो? नइ कहबहक तऽ कहबऽ। अच्छा तऽ सुनह। हमरा सँ साल-छह मासक छोट छल। अनीता नाँव छलै ओकर।

महेन बाबूक छोटकी बहिन एक बहिन आ दू भाई ओकरा सँ नमहर रहै। पिन्डश्याम गोल चेहरा, बड़का-बड़का आँखि, चाकर कपार, पातर-पातर ठोर वाली छोट-छिन मारुनि छल ओ। नाचगान सिखाबक हेतु हुनका ओहि-ठाम मास्टर अबैत छलखिन। पढ़ाबक हेतु तऽ फराके मास्टर रहबे करैक।

बंगाली लोकनि बड़ा मौजी होइत छथि। खाली खेब-पीब, पढ़ब-लीखब आ रुपैए पैसा नहि, नाच-गान आ राग-रंग सेहो चाही हुनका लोकनि कें। ठीके ने छइ हो भाई केओ अगर ठेकान सँ जिनगी बिताबै तऽ कि हर्ज? तऽ हो भाई, ओ अनीता खूब बढ़िया नचै। गला सेहो ओकर बड़ मीठ रहै आ हमरा तऽ खूबे माने। किछु दिन तक तऽ हम ओकरा सँ दूर भगैत रहलहुँ। मुदा देखल जे बेचारी चोराकऽ हमरा लेल बिस्कुट आ चोकलेट लबैत अछि। एक छोट-छिन ककबा आ एक ऐना कतो सँ आनि कए ओ हमरा देलक आ जलहन दऽ कऽ कहलक दादाक (महेन बाबू) संगे रहैत छें। अहि ठाम एकेटा ऐना राखल छैक। कहियो-कहियो ओहि मे अपन चेहरा तऽ देखि लेल कर।

किया, कि अछि हमरा चेहरा मे? हम जे ई पुछलियै तऽ अनीता हमरा दहिना गाल मे एक थप्पड़ मारि कहलक—रहतौ की? तोहर केश बहुत बढ़िया छौक। सोन सन केश सभ के नहि होइत छैक। एहि केश मे ककबा चाहर फिरबाक चाही। कनीकाल बाद फेर बाजल—हम राधा बनब आ तों कृष्ण बनिकऽ हमरा संगे नचबे?

लोक देखत तऽ की कहत?—हम ओकरा दिस देखि कए कहलियैक।

हमरा कान मे ओ फुसफुसा कऽ कहलक—दुपहर मे कहाँ केओ रहैत छैक! आ नाचऽ बेर मे घुंघरू नहि पहिरब। ने झुनुर झुनुरक आवाज हेतै आ ने केओ बुझतै—। एकरा बाद अपन दुनू हाथ हमरा कन्हा पर राखि मधुर

इहिएँ अनीता हमरा सँ हँ करा लेलक आ ओहि दिन तऽ नइ मुदा ओकरा तीन दिन बाद अवसर भेटल आ हमरा लोकनि खूब नचलहुँ। नाचऽ अबाऽ तऽ हमरा अबैत नहि अछि, तखन अनीताक हऽ छलैक से हो भाई हम ओकर बात राखि देलियैक।

फूल बाबू फागुन मे छुटि अएला। महेन बाबू फुलवाड़ीशरीफक कैम्प जेल मे जाकऽ हुनका सँ भेंट कऽ आएल रहथिन। हमरो कुशल-क्षेम कहि आएल रहथिन; छुटिते ओ सोझे महेन बाबूक घर पर पहुँचलाह।

अपना मालिक के देखिते हमर मोन भीज गेल। ओ डाँड़ी उठाकऽ हमरा आँखि मे देखए लगलाह आ पुछलनि—केना रहै छले हैं बलचनमा? हमर आँखि भरि आएल। कहि नहि सकैत छी जे हमरा खुशीक नोर छल अथवा पहिलुका वियोगक।

फेर ओ अपना लोक लग चलि गेलाह। महेन बाबू अपन मालिक मुंगेर गेल रहथि। ओही दिन साँझ कऽ मालिक अपना डेरा मे चलि अएलाह। हम देखल जे मालिक बहुत बदलि गेल छथि। साँझ-प्रात गाँधीक भजन गबैत छलाह। जेले सँ गीताक एक छोट पोथी लए आएल छलाह। किछु दिन बाद बगला मे रहए बला एक चरखा खरीद लएलाह। खैन-पिन सेहो हुनकर बदलि गेल छलैन। मसला मिरचाई किछु ने। तरकारी उसीन कऽ खाइत छलाह। एक दिन देखल जे कटोरी मे गहूम भीजऽ देलखिन। हम तऽ बुझिए नहि सकलियै जे एकर कि हेतैक। दोसर दिन छानि कऽ गहूम के भीजल अंगपोछापर पसारि देलखिन। प्रातःकाल गहूमक धाना जखन अंकुरा गेलैक तऽ फूलबाबू एक-एकटा कऽ खएलनि। कहियो उसनल आलू, पिआज आ दुड़े पर रहि जाइत छलाह। हमरा तऽ हो भाई अन्देशा भऽ गेल जे बाबूक मिजाजे सनकि गेलैन अछि।

कॉलेज सँ नाँव कटि गेल रहैन। गाँव-घर जएबाक तऽ नहि मुदा दरभंगा जाए कांग्रेसक काज करबाक बिचार करए लगलाह। महेन बाबू बीच-बीच मे आबथि आ दूनू मे देर-देर तक गप्प होइन। हम छलहुँ जकाँ हुनका लोकनिक बात सुनी। अपन मालिक आ महेन बाबूक कृपा सँ अक्षर मे मात्रा लगेनाइ आब हम सीख गेल रही। कऽ टऽ कऽ बच्चाक पहिल पोथी हम पढ़ए लागल रही।

फूल बाबूक मोन पढ़ाई सँ उखड़ि गेल रहैन। माए बापक डर आब हुनका नहि छलैन। ओ महेन बाबू सँ एक दिन साफ-साफ कहलखिन—हो भाई, हमरा सँ ई सब नहि हेतह। घरक लोक सब हमरा वकील बनाबए चाहैत छथि। वकालत मे बात-बात मे झूठ बाजए पड़ैत छैक। आब कोनो दोसर-तेसर नोकरी सेहो हमरा सँ नहि हेतै। एतेक जमीन अछि जे हमर माए बाप भूखे नहि मरताह। अस्तु अपना देशक सेवा करए दऽ। तों बलिस्टर बनबऽ, बिलायत जेबह। तोहर रस्ता दोसर छह आ हमर दोसर।

पहिला दू मास मे हमरा माए के नाँव पाँच-पाँच रुपैयाक मनिआडर पठौने छलखिन। जेल सँ अएलाह तऽ पाँच रुपैया फेर पठा देलखिन।

एकदिन भोरे उठि हमरा सँ ओ कहए लगलाह—बलचनमा, महेन ओहि-ठाम नोकरी करबे? हम तऽ पढ़ाई आब छोड़ि देल। दरभंगा समस्तीपुर, मधुबनी, मुजफ्फरपुर, पटना जतए कांग्रेस पठाबैत ओतऽ रहि कऽ काज करब। आब हमरा नोकर नइ चाही। गाँधीक हुकुम छनि जे अपन नवी सेहो अपने साफ करए। अपन कपड़ा अपने साफ करए। अपन भोजन अपने बनाबे।

हम पहिने सँ बुझैत रही। कनीकालक बाद हम कहलियैन—चारि-पाँच मास भए गेल। माए मोन पड़ैत अछि। घर जाए चाहैत छी। माए के बिचार हेतैक तऽ फेरो पटना आयब। अइ पर ओ कहलाह—तऽ चल दरिभंगा तक सँगे। ओही दिन रातिक जहाज सँ हमरा लोकनि देशक (गाँव) दिस बिदा भेलहुँ।

७

३

हमर छोटकी बहिन रेबनी चौदहम बिता कऽ पन्द्रहम् मे पैर राखि चुकल छलि। चेहरा-मोहरा खुलि आइल रहै। जवान भऽ रहल छलै। दुरागमनक येह ने बेस छै! हमरा समाज मे बियाह पर ओते ध्यान नहि देल जाइत छैक जतेक दुरागमन पर।

हमर मोन रहए जे रेबनीक दुरागमन भऽ जाइक। मुदा हमर माए नहि चाहैत रहैक। ओकर विचार छलैक जे रेबनी अखन नेना अछि। दू-तीन बरख आरो नइहर मे खेलि-खा लिए, फेर तऽ जिनगी भरि गिरहस्तीक पहाड़ माथ पर ढोबाक छैहे।

माए जे एना सोचै तकर एक दोसरो कारण रहै। बात ई रहै जे हमरा लोकनि ओहि छोट परिवार मे सब मिलाकऽ तीनिए गोटे रही; खाइ दऽ कऽ हम, रेबनी आ माए। हम सात मास पर देश मे रहि आएल रही। रेबनीए रहै जकरा छाती लगाकऽ माए सुतैत रहै। रेबनीक दुरागमनक बाद माए एसगरि भऽ जाइत। हमर रहनाइ आ ने रहनाइ एके रंग कारण माएक देख-रेख, हिफाजत, खबर गिरि आ परवरिश तऽ हम कऽ सकैत छलियै मुदा रेबनी जकाँ ओकर सहेलीक अभाव हटेनाइ हमरा बूताक बाहर छलै।

हमरा एतबे चिन्ता रहै जे जमीन्दारक गाँव छैक। ई लोकनि लुच्चा होइत छथि। अमला-तहसीलक काज गुमस्ता बराहिलक माथ, घर गिरहस्तीक

देख भाल छोट भाईपर सेवा टहलक काज बहिया खबासक माथ, शेष बचलाह बेटा नाती, भाई-भातीज, आ सार-सरबेटा से बैसल-बैसल ताश पीटता, शतरंज खेलता, शहर जाऽ कऽ सिनेमा देखि औताह, बेकार मोन शैतानक घर। खैन पिन आ आरामक कमिए नहि, काज कोनो करताह नहि ककरो बेटी सयान भेलै नइ कि निशाना लगाबए लगैत छथि। ई नइ कि बहिन-बेटी सभक एके रंग होइत छैक। अपन इज्जत आबरू जे सम्हारैत तऽ दोसरो के नीक होएत छैक। मुदा हौ भाई! जिनका लोकनि कें धन होइत छन्हि से निरट आन्हर होइत छथि। अपन आन किछु नहि सुझैत छन्हि।

आ हम तऽ गरीब ठहरलहुँ। हमरा लोकनिक सभ आर होइते कि अछि। कमाए-खटऽ लेल ई दुनू हाथ, माए बहिन-बेटीक इज्जत आबरू, सेह ने हमरा लोकनिक धन अछि; सेहो कहू, हमरा लोकनि एकरो रक्षा नहि करी तऽ ई जिनगी कोन काजक।

हमर गाँव जमीन्दारक गाँव छल। बड़का घरक कि जवान आ कि बूढ़ सभक आँखि पाप मे डूबल रहैत छैक। दुरागमनक बाद केओ नवकनिया ककरो घर अबै तऽ एहि लुच्चा लोकनिक आँखि ओकरा घोघक चारूकात नचैत रहैत छै। जाबत तक आब-पोन दृष्टि सं देखि ने लेताह ताबत एहि बदमाश लोकनि कें राति मे निन नहि हेतैन। कतेक बेरतऽ एहन भऽ जाइत छैक जे जकरा देखए लेल बाप हरान तकरे लेल बेटा परेशान। ताइदिन मालिक सभक राज रहैन। हुनका लोकनिक खिलाफ लो अपन छोटको आँगुर ने उठा सकैत। ककरो इज्जत आबरू के बेदाग रहए देब हुनका लोकनि के सह नहि छलैन।

हम नइ चाहैत छलहुँ जे हमरा बहिनक शरीर पर ओहि लुच्चा लोकनिक हाथ पड़ै। हम नइ चाहैत रही जे हमर माए अपन बेटीक आमदनीक साधन

बनावे। गरीबी नरक छइ हो भाई! नरक चाउरक चारि दाना छीटकऽ बहेलिया जेना चिड़िया के फसबैत छैक ओहिना ई धनवान मरद लोकनि स्त्रीगणके फंसा लैत छथि। हुनका लोकनि के पास धनो होइत छैन्ह आ बुद्धिओ। हुनका लोकनिक लीला अपरमपार थीक। नमहर खनदानक अवारा सँ अवारा लोक पण्डित आ पुरोहित सँ भलमनसाहतक पदवी पाबि जाइत छथि।

से हो भाई! हम चाहैत रही जे रेवनी आब अपना मरद के संग रहे! बाबू लोकनिक एहि बस्ती मे अपना बहिन के रहनाइ हमरा पसीन नहि छल। छोटका मालिक आ मझिला-मालिक आ दोसर पट्टीक बाबू बबुआन ककरो पर हमरा भरोसा नहि छल। आ आब तऽ हम पटना देखि आएल रही। महेन बाबू कि राजा नहि छलाह? हुनका ओहि ठाम कि सुन्दर स्त्री-पुरुषक कमी छलैन? ओहन जगह पर रेवनी के चारि-छह मास रहि जायब हमरा नहि जँचइत। महेन बाबूक घरक लोक सब नीक नजरिक छलाह। मुदा एहिठाम महेन बाबूक परिवार हमरा कोन काज अबैत! एत तऽ छोटका आ मझिला मालिक रहथि। मलिकानक वेह पट्टी रहैन। हीरा बाबू, बुच्चन बाब, मानिकजी, बचोलबाबू, लालसाहेब—मालिकक ढाका भरि साहेबजादे रहथि। एक सऽ एक शैतान। एक सऽ एक मजनू। इतऽ भऽ नहि सकैत छलै जे हमरा बहिन पर हुनका लोकनिक नजरि नहि रहल होनि।

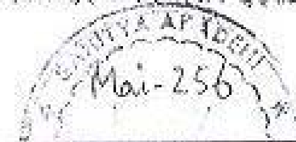
हमर माए ई बात नइ बुझै, ओकरा मालिक सब पर बड़ भरोस छलै। समझैला रौं ओ एतबे कहइ, पानि मे रहि कऽ मोहि सऽ झगड़ा? जिनका लोकनिक ऐंठ खाकऽ तों एतेकटा भेलेहे हुनके लोकनिक विषय मे एहन-एहन बात सोचैत छे? अधरम हेतौ रे बलचनमा, अधरम। भगवान बिगड़ि जैथुन। शहर जाकऽ इयाह विद्या सीख एलेऽहऽ। तोहर बाबा-आजा तऽ सेहो हिनके लोकनिक ऐंठ खाकऽ फेरन-फारन पहिर कऽ जिनगी बिता देलखुन, एहन उड़न्त नइ बन बेटा।

हमर माए अहिना सोचैक। छोट जातिक दोसर स्त्रीगनक सेहो मालिक लोकनिक विषय मे एहने किछु विचार रहैक। खसल अवस्थो मे तऽ ओ लोकनि मालिके छलाह। मालिक लोकनि राजा होइत छथि आ राजा भेलाह भगवानक अवतार। हुनका लोकनिक खिलाफ के किछु सोचि सकैत छल?

मुदा सतति हमरा बुझैबाक फल ई भेल जे माए किछु सोचबाक हेतु मजबूर भेल। ओ राजी भऽगेल जे रेवनीक दुरागमन कऽ देल जाइ।

वैशाखक मास रहैक। ओइ साल आम नहि फरल रहैक। आब हमरा पूरा जनौरी भेटऽ लागल। कच्चा जोख मे पूरे चारि सेर धान हमरा जनौरी मे जाहि दिन माए के भेटलैक ताइदिन ओ आनन्दक धार मे बहि गेल। एहि दुखिया भिखमंगी कें ओही खुशी मे ओ आधा सेर धान दऽ देलकैक। ओइ राति जखन हम खाए बैसलहुँ तऽ बड़ा सिनेह सँ माए हमरा पंखा हौंकऽ लागल। ओकरा नजरि मे हो भाई आब हम पूर्ण आदमी भऽ गेल छलहुँ। छलहुँ ने?

हमरा ओइठाम छोटका जाइत मे मड़ुआक बड़ आदर छैक। रहियो-कहियो बोनि मे धानक बदला लोक मड़ुए के पसीन करैत छैक। अस्तु गरीब के जे थोर बहुत उपरारि जमीन होइत छैक ओइमे ओ मड़ुए रोपनाइ पसीन करैत अछि। वैशाख मे पानि पटा-पटाकऽ मड़ुआक बीआ तैयार करल जाइत छैक। ओकरा नितदिन पाइन चाही, बीत-डेढ़ बीतक भऽ गेला पर मड़ुआक बीआ उखाड़ि लेल जाइत छैक। फेर ओकरा जोतल आ सुरभुरी माटिवला भीजल खेत मे रोपल जाइत छैक। मड़ुआक श्याम-सलोना छोट-पात सँ लहलहाइत खेत तों कहीं देखने छह। नहि देखने छह तऽ देखि अबिहऽ



सेहो सोन हरिअर भऽ जइतइ ? धानक हरिअर डाँटक अपन फराके शोभा छइ तऽ साँवलिया बिहारी मड़ुआलाल के अपन फराक।

घरक पाछू मे हमरा थोरेक जमीन रहए। अइबेर हम अपने मालिकक पोखरि सँ घैल भरि-भरि कऽ उघलौं। हमर बाबू सेहो अहिना पानि भरि-भरि कऽ मड़ुआ-पटबैत रहथि। ठीक पटइ सँ पानि भरबाक अवसर अइ सँ पहिने हमरा कहियो नइ भेटल छल, तइयो जाहि जोश आ उमंग क ओइ बेर मड़ुआक खेती हम कएलौं से देखिकऽ लोक सब दंग रहि गेल। एमहर कनेक थकावट बुझाएल तऽ बीड़ी टानि लेलहुँ। बीड़ी पीबाक इ हिस्सक पटना मे लागल रहे। थकला पर बीड़ीक एकाध दम यऽ नीक लगै छइ हो भाइ! आ फेर हमर तऽ इ हाल अछि जे दू दम खिचलौं कि फेर मिझा देल आ ओइ अधजर बीड़ी कें कानपर खोसि लेलहुँ। तीन बेर मे हम एक बीड़ी खतम करैत छलहुँ।

ओ हमर उपजाइल पहिल फसल छल। डेढ़ कट्ठा खेत मे छ पसेरी मड़ुआ भेल छल। अपन मेहनतिक फल केहन मीठ होइत छइ। अपन उप-जाइल मड़ुआक रोटी सँ पेट तोहर भलेही भरि जाय, हियाव नहि भरतह तोहर, हँ!

मड़ुआक बाद धान रोपबाक दिन अएलै। मालिकक खेत मे दिन भरि हम धान रोपैत रही आ घरक सब काज माए आ रेवती सम्हारे। थाकल-माँदल, मेहनति सँ चूर-चूर जखन साँझ कऽ हम घर आबी तऽ घर मे भोजन तैयार पाबी, दुपहरक भोजन मालिकक दिस सँ खेते मे पहुँचि जाइत छल—दालि, भात आ अचार। धनरोपनीक दिन मे ई लोकनि खेतक जनकें भोजनो करा दैत छलथीन। अइमे दया-मयाक कोनो बात नहि, हुनका लोकनिक अपन स्वारथ काज करै छैन। अपन-अपन खेत पहिने तैयार करा लेबाक

फिकिर पड़ल रहैत छैन। दूर दूर सँ जन बजाओल जाइत छैक। सबके बब्बा-दादा, कका कहल जाइत छैक। सुगा, राजा आ मुन्नाक बोली देल जाइत छैक। पूरा बोनि आ एक बेरक भरि पेट खेनाई दऽ कऽ सब अपन-अपन खेती करैत छथि। ओइ साल पहिल बेर हम पूरा बोनि पर धनरोपनीक काज कएने रही। छोटकी मलिकाइनक किछु दिनकलेल नैहर गेल रहथि। नोकरी छोड़ि कऽ मालिक घर बैसल रहथि। खेतीक काज मलिकाइनक भाई-देखैत रहथीन। मालिक बाबू दिन भरि किताब आ हरमुनियम मे डूबल रहथि।

माए हुनका ओइठाम घरक काज पहिने जकाँ अखनो करैत रहै—बासन धोनाई, पानि भरनाई, झाड़ू-बाढ़नि देनाई, नीपब-पोतब, चुल्हा जरा कऽ भानस चढ़ा देनाई इत्यादि सब काज छलैक। काज बेसी नइ, मुदा लपटौनी बड़ छलै। लपटौनी माने बुझलहक की भाइ? नइ बुझने हेबहक। हौ भाई एक टोइ छइ काज लेनाई—चटसँ कहलहुँ आ पट सँ काज भऽ गेलैक। दोसर होइ छइ खिचौर-खिसीर कएनाई। खिचिर खिचिर माने होइ छइ अपनो झंझट मे पड़ल रहनाई आ दोसरो के ओझरौने रहनाइ। ने अपना समयक कदर आ ने दोसरक। देहात मे जे नम्हर लोक कहबैत छथि, हुनका ओइठाम ने काजक मूल्य आ नइ कमासुत जनक। हमर बाप-दादा लोकनि दू-दू पहर बैस कए मालिकक आँगुर चटकबथिन। मालिकक छोट छिन मेनाक पेर धोअऽ मे हुनका लोकनि के कतेक घंटा लागि जाइत छलैन। बूढ़ा मालिक हैड्रू तमाकुले चुनाबऽ मे आधा पहर लागि जाइत छलैन। सुने छी जे हमर दादा बहुत बढ़िया खवासी करैत छलाह। अपना मालिकक धोती के ओ एहन मेंहो कऽ चुनिअबितथि कि केओ धोती के फुकिरइ तऽ सर सँ उड़ि जाए आ फेर जहिना के तहिना बैस जाए। मालिस ओ एन करथिन कि पागल सँ पागल आदमीक आँखि पर नीन सवार भऽ बैसनि छड़ी

बनाबऽ मे दस कोस तक हुनकर यश रहैन । मुदा हो भाई ! हुनकर तरहत्थीक सब रस चाटिकऽ मालिकक तरबा दक गुलाब बनल रहल हीनि, अपन बाल-बच्चा हुनकर शाइते कहियो भरि देह कपड़ा अथवा भरिपेट भोजन कएने हेतैन । तीन पुरखाक हाल तऽ हमहूँ कहि सकैत छिअऽ । मालिकक पैठक गुन गबैत आ हुनका लोकनिक बिकट-सँ-बिकट गारि के परेम-भाव सँ सुनैत हम अपना दादी कँ देखल । राति-दिन सेवा करिते रहलइ । बाब-आब पाब खुद्दीक लेल हमर माए कोना रिरिआइत घुमै से बिनरक बात छइ ? आ अपना बचपनक थोड़ बहुत हाल हम कहिए देने छिअऽ । आब तोही कहह जे हमर तीन पुरखा कोन काज अएला । मालिकक लेल जीला आ मालिकक लेल मरलाह । शहर मे देखलियै केहन फुर्ती सँ लोक काज करैत अछि, केना एक दोसरक मेहनति आ लगक हुनका लोकनिकेँ ध्यान रहैत छन्हैन । आह, तीन पुश्त पहिने जे आदमी कलकत्ता टाटानगर गेल से ओतै बसि गेल । ओकरा लोकनिक बाल-बच्चा सब पढ़ि लीखि गेलैक अछि हो भाइ, नीक-निकुत पहिरैत खाएत अछि । सब, कारीगर, मिस्त्री, फोरमैन आदि बन गेले । आ सात पुश्त हमरा ओर गाँव मे रहैत भऽ गेल, फटीचरी मे कोनो फर्क नहि पड़ल । दादी के मुँह सँ सुनने छी, हमर पुरखा पहिने पनिचोभ मे बहिआ-गिरी करैत रहथि । हमरा परदादाक परदादा कँ ओहिठामक एक जमींदार दहेज मे जमाइक संग कऽ देने रहथिन । तहिया सँ लऽकऽ ई सातम पुश्त बीत रहल अछि । दुनिया जहान बदलि गेलैक अछि । मालिक लोकनिक दशा बदलि गेलैन अछि । हमरा लोकनिक गुलामी पर काफी असर पड़लैक अछि मुदा अखनी तक मालिक लोकनिक रहन-सहनक ढंग रहलेन कि राति दिन हमरा लोकनि हुनका पाछाँ नांगरि हिलबैत फिरैत छलहुँ । काज ओतेक नहि जते कि

खुशामद । हमरा लोकनिक मुँह सँ दिन मे पचास-पचास बेर मालिक-मालिक, सरकार सरकार, हजूर-हजूर सुनऽ मे जानि नइ बाबू लोकनि कँ की रस अबैत छलन्हि । आ माएक तऽ किछु पूछह नइ, ओ तऽ बात-बात मे मलिकाइन-मलिकाइन, सरकार-सरकार रट लगौने रहए । कलकतिया, मालदह, किसुनभोग आ बम्बई आमक एक कतरा लेल ओ कतेक घंटा तक मलिकाइनक पैर जाँतैत रहैत रहै ।

छोटका मालिक रंगल दिलक आदमी रहथि । चालीस पार कए चुकल छलाह । मोंछ-दाढ़ी साफ । लाल-गुलाबी आ गोल मटोल चेहरा एहन सुन्दर लगैन से कि कहिअ । माथक केश कारी भुजंग रहैन, अँउठिया । ठीक फराक भऽ नहि छलैन । शहरक हवा जे खएने छलाह ? बी० ए० तक पढ़ि कऽ छोड़ि देने छलाह । पहिने किछु दिन सुपौल मे मास्टरी करैत छलाह । बाद मे राँची. हजारीबागक दिस कोनो राजाक ओहिठाम मनेजरी हाथ लगलैन । जाबत तक ओतय रहथि, पाँचो आँगुर घीवे मे । एमहर दू-तीन मास सँ घर बैसल रहथि । मलिकाइन रहथिन नइ । मोन उदास रहैन ।

एक दिन माएक संग रेबनी सेहो फाजदर गेलै । चीकस पीसबाक रहै । माए कहलकै—दू हाथ लगा देबे तऽ जल्दी पीस लेब । मालिक मधुबनी गयथिन, दिनकऽ आम, दूध आ फुलका खाकऽ । रेबनी सेहो संग गेलै । दुनू माए-बेटी चीकस पीस चुकल तऽ मालिक गोर पारलखिन-बलचनमाक माए, अरे तोहर बेटी तऽ बढ़ि कऽ ताड़ भेल जाइत छौ ।

ई कहिकऽ ओ एड़ीसँ शिखा तक रेबनी कँ देखऽ लगलखिन आ नचाकऽ आँखि घुमा देलखिन । सामने दोसर घरक ओसारा पर पलंग पड़ल रहै । गद्दा, चादरि आ गेरुआ, जकरा दूधसन धप-धप उज्जर खोलपर लाल-हरियर

डोराक कसीदा छलैक—लोल मे लोल मिरौने दूटा सुग्गा ! ओही पर केहुनी रोपने मालिक बैसल रहथि ।

आँखि फाड़ि-फाड़ि कऽ ओ रेवनी कें देखलखिन । चिक्कस पीस हैलाएर माए ढंग जखन ओ रेवनीक बात उठौलखिन तऽ ओ कहलकैन—बच्ची छै बाबू अखन, की खाऽ पी कऽ ओ ताड़ हैतैक ।

एते कहि कऽ ओ फेर कोनो काज मे लागि गेलैक । नमहर जाति बलाक सोझा मे हमरा घरक माए-बहिन बहुत कम अबैत छैक । ओहू मे सम्बन्ध यदि मालिक आ नोकरानीक रहलैक तऽ लिहाज आर बेसी बढ़ि जाइत छैक । मुदा भैया, बड़का लोकक चुलबुली तबियत के एतबे मे संतोष कतऽ । ओ लोकनि बेकार हमरा लोकनिक घरक स्त्रीगणक संग बिना बातक बात करबाक बहन्ना तकैत रहैत छथि ।

माएक ओहि उत्तर सँ छोटका मालिकक मोन नहि भरलैन । कनी-कालक बाद कहलखिन—तों जाहऽ आगि लरा बजचनमा माए, रेवनी एमहर आबि कऽ कनी पंखा हौंकि देत । ई बाजि कऽ मालिक एहन फुफकार छोड़लैन जे बुझऽ जेना आगि मे भाँटा । कहिए चुकल छिअ जे हमरा माए के मालिकक नेत पर बड़ा भरोस रहै । ओ हुनका लोकनि कें देवताक अवतार बुझैन । अस्तु ओ आँखि सँ रेवनी के इशारा कएल कै जे जा कऽ कनी पंखा हौंकि दहुन ।

पंखा नइ रहै, बियनि रहै जे रेवनीक हाथ मे दऽ देल गेलैक आ ओ आँखि नीचा कएने बियनि चलाबऽ लगलैक । बियनि मे मूठक संग पातर बाँसक फोंफी रहैत छैक । गोल आ चिक्कन फोंफी के भीतर बियनिक काठी पड़ल रहै छैक । मुट्ठी मे लऽ कऽ कनिके डोलएला सँ बियनि अपने सँ चलऽ लगैत छैक । कि ई फिर्र, खिर्र खिर्र, फिरिर-फिरिर बड़ मीठ आवाज

होइ छइ हो भाई ! बगल मे बैस कऽ केओ पंखा चलएतऽ आ तों एखल-पड़ल हवा खाइत रहइ, तऽ तोहर सपत, हो भाई आँखि नइ लागि जाओ तऽ जे कहइ ।

रेवनी जखन पंखा चलबै छलै तऽ भईं सँ मालिक गेरूआ तर मे हाथ देलनि आ अठन्नी निकाललनि पलंगक । पौआक माथ चपटल रहै, ओही पर अठन्नी धऽ देलखिन । रेवनीक आँखि मे लोभक दरस नइ रहैक, ओ अठन्नीक दिस देखबो नइ केलकै । पहिने जकाँ अडिग रहि मालिक कें पंखा हौंकैत रहलै । मोन मे सोचलक जे दोकान सँ कोनो चीज बस्तु मँगाबऽ चाहैत छथि । अही सँ चुपचाप रेवनी बियनि चलबैत रहलै ।

एमहर मालिक के मोन मे तऽ हो भाइ शैतान झिंगुर जकाँ झकझोरैत रहैन । ओ सोचैत छल हेताह, छौंड़ी छइथि खाँम्ह । नइ हिलै छइ ने डोलै छइ । केहन पाथर छइ । हुनका लोकनिक एहन सोचनाई बेकार नइ रहैन । कारण जखन ओ जुआन रहथि तऽ अही गाँव मे एक दुअन्नी मे जुआन छौंड़ी भेटैत रहै । रेवनी अडिग भऽ कऽ मालिक कें पंखा हौंकैत रहलैन । फेर मालिक अठन्नीक दिस इशारा करैत कहलखिन उठबैत कियाक नहि छें । रेवनी अठन्नी दिस देखि फेर पंखा हौंकऽ लगलैन । कनी काल ठहरि कऽ मालिक सँ ओ पुछलकैन—किछु मँगाबऽ के अछि सरकार, दोकान जाउ ?

ई कहैत काल रेवनीक दृष्टि नीचा दिस रहैक । आँखि मे कोनो विकार नइ रहै । एकरऽ अइ अवस्था मे बेटी सब अहिना संकोची होइत छइ भाई, आ हमरा बहिनक तऽ हाले ने पूछइ । नेने सँ ओ शील-संकोचवाली छलि । आँखि मिला कऽ ककरो सँ बातचीत करैत कहियो ओकरा देखबे नहि केलियैक । ई सोचि कऽ कि भनैया, मालिक मुस्कऽ लगलाह । माथ हिलाबऽ

भौंह तानिकऽ आँखि कें नचौलनि। ओ हुरा करैत आ रहल छलै, हुनक कुविचार सँ अनाहुत।

आन दहिन वनिर मे मालिक खेलल छलाह। एहन अवसर पर चुपचाप ठाढ़ वा नइ-नइ कहैत बीसो के ओ गट्टा पकड़ने रहथि। ई हुनका लेल एकदम मामूली बात छलैन। छौंकऽ खाँगऽ जकाँ हो भाइ बिलकुल मामूली बात। भनसा घर मे माए हमहर हाँड़ू मे तरकारि चीरैत रहै। जनबे करैत छहक बड़का आदमीक अँगना बड़ीटा होइत छैक। चारू दिस घर होइत छैक, बीच मे खुलल जागह आ अइ खाली जागह कें अँगना कहैत छैक। पोखरि जकाँ चौकोर एहन आँगन हौ देखने हेबहक। सोझा-सोझी घरक बीच अतेक दूरी रहैत छैक। ओइ ओसारा पर केओ बात करतै तऽ एमहर बलाकें किछु सुनऽ मे नइ अएतै। अइ ओसारा पर छौनाहक बच्चा कंठ फाड़ि-फाड़ि कऽ मरि जाएत तऽ ओइ ओसारा पर बैसल माए के किछु पता नहि चलतैक। काज-परोजन मे परोसक हजारो बाभन पाँती मे बैस कऽ भोजन करैत छथि। पचास-पचास मोन धान सुखाए लेल पसारि देल जाइत छैक। एतेकटा-टा अँगना होइत छैन्ह जमीनदार लोकनि कें।

तऽ हौ भाई! मालिक के इयाह अवसर सुझलनि आ चट दऽ रेवनीक गट्टा पकड़ि लेलखिन। हाथ झटकि कऽ फुरती सँ रेवनी दू डेग पाछा भऽ गेल, बुझऽ जे केओ ओकरा माथ पर एक सुप आगि राखि देने होइक। पंखो हाथ सँ छूटि गेल रहैक। चीखक बदला हलुक हाय सुनि मालिक एकरा नाटक बुझलखिन आ पलंग सँ उठि कऽ आगाँ बढ़लाह।

माए गे माए—रेवनी बकारि तोरि कऽ भागल तऽ मालिक उनटे ओर सँ सोर पारलखिन—कहाँ गेलें गे बलचनमाक माए, तोरा बेटी कें तऽ भूत लागि गेलैक अछि। एक हाथ मे हाँड़ू आ दोसर मे छीलल तरकारिक फाँक

लऽ कऽ माए दछिनबरिआ घर सँ बाहर भेलै तऽ रेवनी बेतहाश दौड़ि ओकरा सँ चिपटि गेलै—गे माए गे माए! ओ शैतान ऐहो आँगन मे बिछु दूर बढ़ि आएल रहै आ सुखाएल गला सँ खिलखिलाइत रहै।

हमर माए एहन हक बक भऽ गेल कि आँखि फाड़ि कऽ रेवनी दिस मात्र देखि रहल छलि। एमहर मालिक अपन चालि बदललनि। अपन दहिना हाथ हिला-हिलाकऽ जोर सँ चीकरऽ लगला—होय् होय्! बाप रे बाप! बिरनी काटि लेलक।

रेवनी के छोड़ि कऽ माए दौड़ि अएलै। अही बीच मालिक अपना बाँहि पर आने सँ बिठुआ काटि लेलनि, कि चेन्ह निकलि आबे। एकरा बाद ओ माए सँ कहलखिन दू बुन्द मटिआ तेल तऽ लाउ।

अपना ओइठाम बिरनी कटला पर मटिया तेल लगबैत छैक। घर मे मटिया तेल रहबे नइ करै। ई बात मालिक के बुझल रहैन। तइयो माए के ओ कहलखिन दौड़, कतौ सं बुन्द भरि मटिआ तेल लऽ आ। ओमहर दछिनबरिआ ओसारा पर बैस कऽ रेवनी सिसकि रहल छल। आँगन फेर सुन्न भऽ गेलै कारण माए मटिया तेल लाबए चलि गेल रहैक। लग मे आबि कऽ मालिक रेवनी सऽ कहलखिन—पगली कहीं के! भेलौ कि तोरा? हम तऽ अहिना तोरा छूबि देने छलिऔ आ तों करन पिसाची खेलऽ लगलें। तोरे एतेकटा उमरि मे तोरा माएक दुरागमन भेल रहैक। आ अहिना पचीसो बेर हम ओकर हाथ पकरने हेबै·········

झूठ-क्रोध मे दुनकि कऽ रेवनी जबाब देलकैन—आहाँ झूठ बजैत छी! एतेक कहिकऽ ओ उठि ठाढ़ि भेल। दुनू हाथ पसरि कऽ आशा सं मालिक ओकरा घेरऽ चाहलखिन। रेवनीक भौं अइहेर तनि गेलैक, चेहरा पर घृणा भरि गेलैक। हिम्मत बान्हि कऽ ओ कहलकैन—ई की भऽ गेल अहाँ

आहाँ के मालिक ?''''''

सरकार'''सरकार'''। मालिक एहन हँसी हँसलनि कि रेवनीक होश गुम भऽ गेलै। तामसक आ कमजोरीक ई खिलखिलाहट पंद्रहसालक ओइ अबोध छौंड़ीक लेल बिल्कुल नव वस्तु रहैक भैया, एकदम नव वस्तु।

डर सँ ओकर करेज काँपऽ लगलै, मना काँपऽ लगलै, जेना केराक चिक्कन पात बसातक हलुक सिहक पाबि कऽ काँपि उठैत छैक। कमोकासक लेल बेचारिक होश गुम भऽ गेलैक। अचेत जकाँ भऽ गेल। मुदा रहल ठाढ़े।

अनचोके रेवनीक भीतर बिजली जकाँ क्रोधक लहरि दौड़ि गेलैक। ओकर अंग-अंग बुझऽ जे कन-कना उठलइक, आँखि मे लाली चढ़ि अइलैक। छाती धड़कऽ लगलैक आ ठोढ़ फड़कऽ लगलैक।

मालिक अपना धुन मे मस्त रहथि। ओ राछ्छस तय कऽ ने ने छल जे अइ अइ छौंड़ी कें अछूत नइ छोड़ब। बहुत दिन सँ हुनकर आँखि हमरा बहिन पर लागल छलैन। ओ अवसर तकैत छलाह। आ देवक इच्छा, आइ अइ शैतान कें अवसर भेटल छलैक। एक साधुक मुँह सँ हम बहुत बढ़िया पद सुनने छलहुँ भैया। मुदा आब मोन नइ अछि। ओ पदक माने इयाह छलैक जे कामिनी आ कंचनक पाँछा ककरो मोन जखन खिचाइत छैक तखन ओकरा ऊपर एक सै बोतल दारूक निशा चढ़ि जाइत छैक। से भैया ओइ दिन हमरा छोटका मालिक पर सौ बोतलक निशा चढ़ि गेल रहैन। अपन होश-हवास के गवाँ देने रहथि।

अन्त मे जबरदस्ती ओ नीचा मे रेवनी के पटकि देलखिन आ ओकरा देहपर काबू करक कोशिश करए लगलाह। पन्द्रह वर्षक ओ अबोध आ असहाय कन्या अपन सम्पूर्ण ताकति बटोरि कऽ ओइ पस्त दशा मे सेहो मोकबिला करऽ लागल। कुकुर आ बिलाइक लड़ाई तों कहियो देखलहक

अछि ? वैह हालत रहैक। हमर बहिन हारल नइ। ओ मालिकक गट्टा पर एते जोर सँ दाँत गड़ा देलकैक कि ससुर अचेत भऽ गेलाह आ रेवनी बिजलीक फुर्ती सँ छुटि कऽ भागि आएल।

एकराबाद जे बवंडर उठलैक ओ हमरा जीवनक रस्ते बदलि देलक।

बात ई भेलैक जे छोटका मालिक एकदम आगि बबूला भऽ गेला। मटिया तेल लऽ कऽ मार जखन हुनका लग गेलैन्ह तऽ ओइ बेचारिक पीठ पर ओ कसिकऽ चारि लात मारलखिन्ह। मार कानल नहि अइँचकऽ रहि गेल। रेवनी कें तखन ओ ओइ ठाम नइ देखलकै तऽ कोनो मारि अन्देसा सँ ओकर माथ चकराए लगलैक। छोटका मालिकक एहि राच्छसी स्वभाव के ओ नहि जनैत हो, से बात ने रहै। ओ सब जनैत रहै। बेचारीक चेहरा उजर भऽ गेलैक। आ आँखिक नोर सुखा गेलैक। आँगन के खुन्न पाबि कऽ मालिक पाछाँ ओकरा पानि भरक रस्सी सँ हाथ पीठ पलंग सँ बान्हि देलकै। आब ओ फूटि-फूटि कानऽ लागलि तऽ मालिक गुर्रा कऽ कहलखिन—बाज साली, अपना बेटी कें एतऽ लऽ अइबे कि नइ ? बाज।

ओ बेचारी की जवाब दितैक। अपन जानक डर सँ लोक कि नइ बाजि जाइत अछि। मुदा हमर माए बहुत दिलेर रहए। हमरा दाइ जकाँ बात-बात मे ओ दाँत निपोड़ऽ नहि जाने। मोनक कमजोर नहियो भेला पर अपन इज्जत आ मानीक ओ बहुत पक्का छल।

ओइ दिन ओहनो दशा मे कोनो तरहें मालिक हमरा माए सँ कोनो तरहक वचन नइ लऽ सकला। ओकरऊपर बहुत पिटाई पड़ल रहैक। कुहरि-कुहरि कऽ समय काटलक। घेलक-घेल नोर बहैलक, तइयो ओ नीछरि माउगि अइ शर्त पर मालिकक चेल सँ नइ छुटऽ चाहलक जे ओ हुनका ओइठाम रेवनी कें लऽ कऽ

आयत। ओ पाछाँ नोर भरल आँखि सँ कानि-कानि कऽ ओ कहलक—बबुआ बालचन ! भरि गेनाइ लाख गुन नीक मुदा इज्जतिक सौदा केनाइ नीक नहि।

अपन माएक मुँह सँ एहन बात सुनि कऽ हमर छाती जुड़ा गेल। भागवंते के' एहन माए भेटैत छैक भैया। हमहूँ ई ठानि लेलहुँ चाहे उजड़ि जाए पड़ए, चाहे जहल-दामुल भऽ जाए, चाहे फाँसी चढ़ी, मुदा कहियो ओहि जालिम के आगाँ माथ नइ झुकायब।

हम थोड़ दिन घर पर नइ रही, बाहर गेल रही। दूर नइ, लगे ढ़ अढ़ाइ कोस। बात इ रहै जे महपुराक खाँन बहादुर मद्दुल्ला खाँ कुश्तीक बड़ा शौकीन रहथि। नवाबी खानदानी रहथि। बहुत बड़का जमींदारी रहैन। इलाका भरि मे इए टूटा खानदान रहैक जे कइएक सौ बरख सँ राज करैत चलि अबैत रहैक। एक खनदान इयाह हमरा मालिकक रहैन, आ दोसर खान बहादुरक। हमरा मालिकक बहुत जमींदारी बिका गेल रहैन। दसे-पाँच हजार सालाना आमदनीक मौजे बाँचि गेल रहैन। ई छोटकिन जमींदारिओ बँटि कऽ एकदम छोट भऽ गेल रहैक। सोलह आनाक सरकार छोट-छोट पट्टी मे बँटैत, एकन्नी, अधन्नी, पैसा, पाँच-कौड़ी दू-कौड़ी आ आधा कौड़ी तक भऽ गेल रहैक। हमरा मालिकक एहन एक पट्टीक मालिकक नाँव पचकौड़ी बाबू रहैन। एक दोसरे पट्टीक कोनो बाबूक नाम तिनकौड़ी बाबू रहैन मुदा नबाबी खानदान। जमींदारी अखन तक ओहिना रहैक। पुरनका रोब दाब आब महपुरावलाक नइ रहि गेल छलैन। तइयो पचास साठि हजार रुपया वसील बला। जमींदारीक जेहन रोब होयक चाही से तऽ रहबे करैक।

खान बहादुर कें कुश्ती लड़बाक बड़ा शौक रहैन। दूटा पहलवान छौ ओ अपने पोसने छलाह। हुनकर कहब छलैन जे हाथीक बदला पहलवान

पोसबाक चाही। सवारीक काज तऽ बग्गी टम-टम सँ चला लेल जा सकैत अछि मुदा अखारा मे जखन दू पैतराबाज दू पट्ठा आपना मे लपटैत अछि तखन जे आनन्द देखऽ वला कें भेटैत छैक से हाथी पोसऽ बलाकें की खाकऽ भेटतैक।

तऽ हम ओहदिन महपुरा दंगल देखऽ गेल रही। फिरलौंतऽ साँझ भऽ गेल रहैक। गाँवक बाहरे चुन्नी सँ भेट भेल। ओ हमर नकोटिया संगी रहए। वैह पहिने हमरा टोकलक—के ! बालचन ! !

पाइनक नाला रहैक। थोड़ मे लाठी थोपिकऽ ओकरहि बले हम बाहर टपि अएलौं आ जवाब देलियैक—हँ चुन्नी, अबेर भऽ गेल। महपुरा सँ आबि रहल छी।

खूब कुश्ती देखने हेबऽ, के जोड़ा छलै ? हम आगाँ बढ़िकऽ कहलियैक मौला, तोंतऽ गेबे नहि कएलह। तोरा तऽ ने अपना महींस सऽ छुट्टी भेटैत छह आने महरानी सँ। महींस फोलैत छह तऽ महरानी बान्हल रहैत छथुन आ महारानी के चखैत छह तऽ महींस बान्हल रहैत छह।

हमरा हँसी आबि गेल। जोर सँ भभा कऽ हम हँसि पड़लहुँ, मुदा जवाब मे चुन्नी चुप रहल। हम सोचलहुँ-अन्हार छइ, चुन्नी मुस्काइत अछि। फेर पुछलियैक —चजैतनइ छइ ? भौंसी दुलत्ती मारलखुन अछि ? चोट लागल छह तऽ चलह हम मालिश कऽ देत छिअह। पटना सँ सीख अएलहुँ अछि।

आब हम एक दोसराक लग आबि गेल रही। झाँकि कऽ हम देख-लियैक, चुन्नीक मुँह बड़ उदास रहैक। फूजल ठोर मे सँ उज्जर दाँत सेहो उदासीक सबूत देत रहैक। लाठी कें बगल मे दबा कऽ दूनू हाथ सँ हम चुन्नीक कान्ह झकझोरि पुछलियैक—की बात छैक ? एतेक काल सँ तों चुप किएक छह ? कोनो नबधात तऽ नइ भेलैया ? तइयो चुन्नी किछु नहि

बाजल। स्थिर सँ हमरा हाथ केँ अपना कान्ह सँ छोड़ैत कहलक—किछु नहि।

एतेक बाजि चारि डेग आगाँ बढ़ि चुन्नी फेर रुकि गेल। हमर मोन तऽ पहिने खटकि गेल रहए, आब सन्देह पक्का भऽ गेल जे टोल परोस मे कोनो जरूर खराब बात भऽ गेलैक अछि। आब हमरो चुहलबाजी समाइ भऽ गेल आ कोनो खतराक अनदेशा काँट बनिकऽ मोन केँ बेधऽ लागल। चारिडेग हमहू आगाँ बढ़िकऽ चुन्नीक आगाँ ठाढ़ भय गेलौं आ कहलियैक हमर शपत कहऽ की भेलौ भैया। महीस ने तऽ नोहर ककरो खेत मे चलि गेल छलैक? मालिकक कोनो छौंड़ा बात ने तऽ कहि देलकइ अछि?

एतबो पर चुन्नी चुप रहल। खाली हमर हाथ पकड़ि ओही ठाम एक-पेरियाक कात मे पोखरिक भीड़ पर धम्म सँ बैस गेल। हमहू बैस गेलहुँ। मोन हमरो भारी भऽ गेल रहै। कनीकाल हम दुनू चुप रहलहुँ, फेर चुन्नी बाजल, फुस फुसाकऽ—तों घर नइ जाऽ। किया?—आँखि फाड़ि कऽ आ दम साधिकऽ हम ओकरा दिस देखऽ लगलियैक। ओ थोड़बहि मे मोनबला सब बात हमरा कहि देलक आ फेर कान्ह पकड़ि कऽ कहऽ लागल—बलचन, आइ दिन भरि छोटका मालिकक हरबाह-चरबाह तोरा तकैत फिरलकौ। पचीसौं आदमी सँ ओ तोरा विषय मे पुछलकिन कहाँ गेल बलचनमा? भैया, कनीकाल तों अही ठाम बैस, हम दीसा फिरि कऽ अबैत छी फेर तोरा अपना ओइठाम लऽ जएबौ।

हमरा पैरक नीचा सँ माटि हटऽ लागल। आँखिक आगा अन्हार घेर लेलक। हम बौक बनि गेलहुँ। हमरा ओहि हालत मे छोड़िकऽ चुन्नी दीसा फिरऽ लागल। ठेहुन पर कपार राखि हम गुम-सुम ओहिना बैसल रहि गेलहुँ। हमरा मोन मे किसिम-किसिम के भाव उठैत छल। एक मोन तऽ

ई होइत छल पचरिया हाँसू लऽ कऽ दुपहर राति मे जाइ आ छोटका मालिकक केँ घेंट काटि आबी। दोसर मोन ई होइत छल जे मालिकक कागजक ओइ बंडल केँ उठा लाबी जाइ मे हजारक तमस्सुक आ सैकड़ा दस्तावेज राखल छैक। तेसर बात जे मोन मे उठए ओ ई जे माए बहिन केँ राता-राती लऽ कऽ पटना चलि जाई। चारिम बात इहो मोन मे उठल जे अहिठाम सँ सनटे दरिभंगा चलि जाइ एतगरे ओतए आए फूल बाबू सँ छोटका मालिकक सब करनी कहि दी। अइतरहें किसिम-किसिमक बात हमरा मोन मे उठि रहल छल। एहन बिपत्ति मे हम कहियो नहि पड़ल छलहुँ। भैया, छोटका मालिकक विषय मे ऊँच विचार तँ हमर कहियो ने रहल, मुदा आदमी एहन राकस होएत, ई तऽ सपनो मे नइ सोचइ छलऊँ। एतेक काल मे चुन्नी दीसा फिरिकऽ पंछुआ करऽ लागल। आवाज अबैत छलै—छपर छप्प—छपर-छपर-छप्प।

अइ आवाज सँ हमरा किछु होश आएल आ हम सम्हरि गेलहुँ जे चुन्नी सँ सेहो पूछि ली। एखन दिमाग किछु काज नइ कऽ रहल छल। मोन विरोक खर भऽ रहल छल।

हाथ पैर धो कऽ कुरुर कऽकऽ चुन्नी ऊपर पोखरीक भीड़ पर, जतऽ हम बैसल छलहुँ आएल। हमर कान्ह डोला कऽ ओ कहलक—पगलपन सँ तऽ किछु हैतइ नइ, ठंडा मान सँ सोचि विचारि कऽ आ दोस मीत सँ राय-सलाह कऽ कऽ ठीक करबाक चाही जे एहि राक्छस के हमरा लोकनि कोना सधाए करी!

चुन्नीक ई बात हमरा नीक बुझाएल। दोस्त-महीम, हित-बन्धु तोरा सब ठाम भेटतऽ भाई? जतए अपन बुद्धि काज नहि करए ओतए हीत-मीत सँ राय लेबेक चाही। एक आदमीक बुद्धि सँ दस आदमीक मिलल-जुलल बुद्धि लाख गुना बढ़िया छैक। हमरा एहि समय मे किछु नहि सूझि रहल

छल । चारू दिस घुप्प-अन्हार बुझाइत छल । कोड़-करेज थर-थर कँपैत छल । एहन दशा मे चुन्नी हमर सहारा भेल आ हम उठि कऽ ठाढ़ भेलहुँ । ओ कहलक—होँहू घाट पर जो आ हाथ पैर धो आ । हाथ-पैर-मुँह धोला सँ थकान सेहो हटतौ आ मोन सेहो हलुक भऽ जएतौ ।

लाठी ओकरा थमा कऽ हम पोखरिक घाट दिस बढ़लहुँ । नीचा ठेहुन भरि पानि मे पैसि कऽ हाथ मुँह धोलहुँ । खखारि कऽ गला साफ कएलहुँ । रगरि-रगरि कऽ घुट्ठी आ पैर धोलहुँ । आँखि-नाक, कपार, कान, कनपट्टी, गरदनि, आ पाँजर पर भीजल हाथ फेरल आ बाहर निकलि अएलहुँ । चुन्नी तावत तक ठाढ़े छल । फेर हम दुनू गोटे आगाँ गामक दिस बढ़लहुँ । ओ आगाँ-आगाँ आ हम पाछाँ पाछाँ ।

चुन्नी हमरा सोझे नहि आनल । मालिकक पट्टी सँ फराके-फराक गोसाईंगीक भीड खेतक आरि पर भऽ सीरी अमातक घरक पछुआर दने ओ हमरा अपना घर लऽ गेलइ ।

भाई, तोँहूँ तऽ देहाते के रहऽ बला छऽ । जनबे करैत छहक जे देहातक लोक सब साँझ-सबेरे खा-पी कऽ सुति रहैत छैक । बूढ़ पुरनिया तऽ राति मे बड़ी काल तक खँसैत-खोखैत रहैत छैक वा अन्हारे मे अपन बितलाहा दिनके मोन पारि कऽ विभोर भए बतियाइत-बतराइत रहैत छैक । दिनक मेहनति सँ चूर-चूर जुआन आ अधेड़ लोकनि बहुत पहिने सुइत रहैत छथि । खेतीक समय नइ रहल तऽ बेकारी मे सुतैत-ओंघियाइत दिन बितैत छैन्ह आ राति कऽ जल्दी नहि सुतैत छथि । लोरिक, बिरहा, सल्हेस आ कबीरक भजन गबैत रहैत छथि आ फेर कोनो चौपाड़ि पर पुआरक बीड़ी पर बैसि तो हुनका लोकनि के तमाकुल मलैत आ चिलम फुकैत देखबहुन । स्त्रीगण सब बेर तक जगैत रहै छथि आ तड़के उठि जाइ छथि ।

चुन्नीक बाप मनियार मंडल मामूली ढंगक गृहस्थ रहथि । अपन पहिल उमिरक सात बरख तक ढाकाक कोनो पटकल मे मजूरी कऽ कऽ काफी टका ओ चुन्नीक माए के पठौने रहथीन । चुन्नीक माए जिनका छोटे उमिर सँ हम धन्नी काकी कहक अभ्यस्त भऽ गेल रही ; बड़ा लछमिनिया रहैक । अपन घरवलाक कमाइ सँ धीरे-धीरे ओ तीन बीघा खेत लऽ नेने रहए । आब ई लोकनि छोटका जातिबला मे हैसियत बला बुझल जाइत रहथि । बुझले जाइत रहथि से नहि, हैसियतो रहनि । दू महीस, एक जोड़ा बरद आ आँगन मे चारू दिस घर रहैन । कमाए-खटाए बला तीन समर्थ जवान रहैक । मज-बूत काठीक दूटा कमासुत स्त्रीगण रहैक । बेर बखत पर सलाह देबाक लेल बूढ़ रहैक । लछमिनियाँ बूढ़ रहैक । हमरा अइठाम एहन परिवार के भरल-पूरल परिवार कहैत छैक ।

ओइ राति कतौ बिरादरी मे भोज रहैक । चुन्नीक दुनू भाइ आ बूढ़क अपने बाल-बच्चा के संग लऽ कऽ पात भरमा गेल रहथि । भानसक झंझटि नइ रहला सँ जनी-जाइत सब परोसियाक आँगन मे गप्प लड़ाबऽ गेल रहथि दरबाजा पर महीस आ बरद बान्हल रहैक । बेसार खाली रहैक आ घर सुन्न ।

एहन समय मे पैर सारिकऽ हम दुनू ओइ आँगन मे ढुकलहुँ । चुन्नी अपना पुबरिया घरक केबार खोलि कऽ कहलक—आराम करह, हम भोजनक इन्तजाम करैत छी आ तोरा माएक समाचार सेहो लऽ अबैत छी ।

चुन्नी चलि गेल । हम अपन लाठी कोना मे भीतक अधडेगा दऽ ठाढ़ कऽ देलियैक । गंजी निकालि कऽ अलगनी पर टाँगि देलियैक । धोतीक फेँटा कनी ढील कऽ लेलहुँ आ ओछाएल सितलपाटी पर अन्हार मे परि रहलहुँ ।

बड़ा भूख लागल रहए भाइ । मुदा जे किछु भेल रहैक ताहि कारण भूख सुखा कऽ अंतरीक कोनो कोन मे नुकिया गेल छल । हमर दाइ एक बेर

कहिने रहै—बहुत जास्ती खुशी हो तइयो भूख मेटा जाइत छैक। से ओइ दिन हमर भूख उड़ि गेल। हम बेर-बेर एसगर ओइ अन्हार मे इएह सोची जे छोटका मालिक सँ डटि कऽ मोर्चा लेबऽ बिना निस्तार नहि। बात साफ रहैक। दू मे सँ एक, चाहे अपना बहिन के ओइ जालिम कें हाथ कऽ दी अथवा मुसीबतक पहाड़ खुशी-खुशी माथ पर उठाबी। तेसर कोनो रास्ता नहि। मोने-मोन पक्का कऽ लेलहुँ जेल चलि आयब, फाँसी चढ़ि आयब, गाँव सँ उजड़ि जायब मुदा एहि शैतानक आगां सपनों मे माथ नहि झुकायब। भैया हम उठि कऽ बैस रहलहुँ। डाँड़ सोझ कऽ लेलहुँ। ओइ घुप्प अन्हार मे हम अपना मुद्दइक छाँह साफ-साफ देखऽ लगलहुँ। ओइ राक्षस के ललकारैत हम बाजि उठलहुँ—बेशक, हम गरीब छी। तोरा संग अपन धन, कुल-खानदान बाप दादाक नाँव, अरोस-परोसक जान-पहचान, आ जिला-जवार मे मान छौ आ हमरा संग किछु नहि अछि। मुदा आखरी दम तक हम तोरा विरुद्ध डटल रहब। अपन सम्पूर्ण ताकति के तोरा विरोध मे लगा देब। माए आ बहिन के विष दऽ देब किन्तु तों ओकरा लोकनि के अपन रखेली बनेबाक सपना कहियो पूर्ण नहि कऽ सकबें………

हम बैसल नहि रही सकलहुँ। भीतर सँ निकलि आङन मे घूमि फिर करए लगलहुँ। तों कलकत्ताक चिड़िया घर देखने छह भैया? ओतए जाहि पिंजड़ामे शेर रहैत छैक से देखने हेबहक शेर जखन खिसिआएल रहैत छैक तऽ क्रोध सँ ओकर आँखि लाल रहैत छैक आ ओ पिंजड़ा मे बन्द रहैत छैक तऽ कि करैत छैक? इएह कि अपन पिंजड़ा मे पाँच डेग एमहर आ पाँच डेग ओमहर, कहुना क्रोधक आँच के घूमि-फिर कऽ पचबैत अछि। से भैया, हमहुँ अपना क्रोधक आँच मे चुन्नीक ओइ छोट-छिन आँगन मे फेरा लगा कए पचाबए लगलहुँ।

अरे, तों चक्कर लगा रहल छँ—चुन्नीक आवाज आएल तऽ हमरा ध्यान

टूटल। ओकरा एक हाथ मे रोटी रहैक आ दोसर मे कटोरा। हमरा किछु पुछबा सँ पहिने ओ बाजल—रेबनी सुति रहल छैक आ चाची (हमर माए) पड़ल अछि। हम ओकरा लोकनि के समझा बुझा देलियैक अछि। तोरा विषय मे निश्चिन्त कऽ देलियैक अछि। ले पीढ़ी पर बैस जो आ खाले, हम डोल कऽ टटका पानि भरि लबैत छी।

हम नहि बैसलहुँ तऽ चुन्नी हाथ पकड़ि कऽ बैसा देलक। रोटीक नमहर टुकड़ी तोरि कऽ आ तरकारी बला कटोरी मे डुबाकऽ चुन्नी हमरा मुँह मे कोंचि देलक। मिरचाइ हम नेने सऽ कनी कम खाइत छी मुदा रामखिलावनीक ओइ तरकारी मे बनाबऽवाली नइ जानी कतेक मिरचाइ झोंकि देने रहैक! मिरचाइक अधिक कड़ स्वाद हमर निशा के तोरि देलक। निशे कहिअऽ भाइ, कारण मोनक बेचैनी, दिमागक परेशानी आ जीवरक बेकली मनुष्य के ओहिना बेहोश कऽ दैत छैक जेना दारू आ तारी!

तऽ तरकारीक कड़ सँ हमर ध्यान टूटल, हम पुछलियैक—तों कि खएबह?

हम तऽ खा कऽ पोखरिक दिस गेलहुँ। छोटका महींसक मोन खराब छैक। सरदी भऽ गेलैक अछि। अही वास्ते अतिया भोज मे नहि जा सकलहुँ छैक जिनके रायक छलैक। तोरा वास्ते रामचरन कक्काक घर सँ रोटी लेलिअइ अछि। हुनका ओहिठाम बुढ़ियाक पथ-पानि लेल सतति आगि जरिते रहैत छैक।

चुन्नी टटका पानि लऽ आएल रहै। रोटी जौ के रहैक। रामखिलावनीक तरकारी आ जौ के रोटी बहुत बढ़िया लगैत छैक, मुदा ओइ राति तऽ हमर जीभे बथरा गेल रहए जेना-तेना गिर कऽ भरि इच्छा पानि पीलहुँ आ बाहर आ कऽ लम्बी भऽ गेलहुँ। हम चुन्नी सँ बात करऽ चाहैत रही, मुदा ओकरा कोनो जरूरी काज सँ चमनटोली जएबाक रहै। ओ कहलक जखन आराम करह। भोरे हमरा लोकनि उठब आ तखन गप्प होयत।

हम बहुत कालतक गुनधुन मे पड़ल रहलहुँ। किसिम-किसिमक बात सोचैत रहलहुँ आ ओहि सोच फिकिर मे पता नइ कखन नींन आबिगेल।